Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

اِلَّا رَسُوۡلٌ ۚ قَدۡ خَلَتۡ مِنۡ قَبۡلِہِ الرُّسُلُ

(अल् मायदा : 76)

अनुवाद : मसीह इब्ने मरियम एक रसूल ही तो है । इस से पहले जितने रसूल थे सब के सब गुज़र चुके हैं।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 35

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बद्र

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

23 मुहर्रम 1442 हिज्री कमरी 2 तबूक 1400 हिज्री शम्सी 2 सितम्बर 2021 ई..

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

सात व्यक्ति जिनको अल्लाह अपने साया में रखेगा

(1423) हज़रत अबू हुरैराह रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : सात व्यक्ति हैं जिनको अल्लाह तआला उस दिन अपने साया में रखेगा जिस दिन उसके साया के सिवा और कोई साया नहीं होगा। आदिल बादशाह और वह जो अल्लाह तआला की इबादत में जवान हुआ हो और वह व्यक्ति जिसका दिल सज्दों में लगा हुआ है और वह व्यक्ति जिन्हों ने अल्लाह तआला के लिए मुहब्बत रखी और इस पर इकट्ठे रहे और इस पर जुदा हुए और वे मर्द जिसको अत्यधिक सुन्दर महिला ने बुलाया हो और वह (उसे) कहे मैं अल्लाह से डरता हूँ और वह व्यक्ति जो सदक़ा करे और उसे ऐसा छुपाए कि उसके बाएं को ज्ञात न हो कि उस के दाएं ने क्या ख़र्च किया है और वह व्यक्ति जो तन्हाई में अल्लाह तआला को याद करे और उसके आँसू बह पढ़ें।

(1424) हज़रत हारिसा बिन वह्ब ख़ज़ाई रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सुना, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे : सद्क़ा करो क्योंकि जल्द तुम पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि व्यक्ति अपने सद्के को लेकर फिरेगा तो दूसरा व्यक्ति (उसे) कहेगा : यदि तू कल लाता तो मैं तुझ से उसे ज़रूर स्वीकार कर लेता परन्तु आज मुझे इस की आवश्यकता नहीं।

(सही बुख़ारी, भाग 3 किताब अल् ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

जो शक्तियां इन्सान को दी गए हैं। यदि वह उनसे काम ले तो निसन्देह वली हो सकता है।

कोई व्यक्ति अपने आपको वंचित न समझे। क्या ख़ुदा तआला ने कोई सूचि प्रकाशित कर दी है जो यह समझ लिया गया है कि हमें हिस्सा नहीं मिलेगा।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

सुलूक का आसान मार्ग

हमारी जमाअत को चाहिए कि हिम्मत न हार बैठे। यह बड़ी मुश्किलें नहीं हैं। मैं तुम्हें निसन्देह कहता हूँ कि ख़ुदा तआला ने हमारी मुश्किलें आसान कर दी हैं। क्योंकि हमारे सुलूक के मार्ग दूसरे हैं,हमारे यहाँ यह अवस्था नहीं है कि कमरें झुक जाएं या नाख़ुन बढ़ाईं,या पानी में खड़े रहें या चिल्ला कशियाँ करें या हाथ ख़ुश्क करें और यहां तक कि सूरतों भी बिगड़ जाएं। इन अवस्थाओं के धारण करने से वे लोग अपने विचार में ख़ुदा वाला होना चाहते हैं परन्तु मैं देखता हूँ कि ख़ुदा तो क्या मिलना है, इन्सानियत भी जाती रहती है परन्तु हमारे सुलूक का यह तरीक़ा नहीं है,बल्कि इस्लाम ने बहुत ही आसान मार्ग रखा है और वह खुला मार्ग है जिसका वर्णन अल्लाह तआला ने यूं फ़रमाया है: اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ (अलफ़ातिहा:6)अब अल्लाह तआला ने जो ये दुआ सिखाई है। तो इस तौर पर नहीं कि दुआ तो सिखा दी परन्तु सामान कुछ नहीं बल्कि जहां दुआ सिखाई है वहां सब कुछ मौजूद है। अत: अगली सूरत में इस के स्वीकार होने का इशारा है,जहां फ़रमाया: ذٰلِکَ الۡکِتٰبُ لَا رَیۡبَ فِیۡہِ ہُدًی لِّلۡمُتَّقِیۡنَ (अलबकर:3) यह ऐसी दावत है कि दावत का सामान पहले से तैयार है।

अत: यह शक्तियां जो इन्सान को दी गए हैं। यदि वह उनसे काम ले तो निसन्देह वली हो सकता है। मैं निसन्देह कहता हूँ कि इस उम्मत में बड़ी क़ुव्वत के लोग आते हैं जो नूर और सिदक़ और वफ़ा से भरे हुए होते हैं। कोई व्यक्ति अपने आपको वंचित न समझे। क्या ख़ुदा तआला ने कोई सूचि प्रकाशित कर दी है जो यह समझ लिया गया है कि हमें हिस्सा नहीं मिलेगा। ख़ुदा तआला बड़ा करीम है। इस की करीमी का बड़ा गहरा समुंद्र है,जो कभी ख़त्म नहीं हो सकता। और कोई तलाश करने वाला और मांगने वाला वंचित नहीं रहा है। इस लिए तुम्हें चाहिए कि रातों को उठ उठकर दुआ माँगो और इसके फ़ज़ल को तलाश करो। हर एक नमाज़ में दुआ के लिए कई अवसर हैं। रुकू ,क़ियाम, क़दा, सिज्दा इत्यादि। आठ पहरों में पाँच बार नमाज़ पढ़नी पड़ती है। फ़ज्र, ज़ुहर, अस्र, मग़रिब, इशा। और इस पर तरक़्क़ी करके इशराक़ और तहज्जुद की नमाज़ें हैं। ये सब दुआ ही के लिए अवसर हैं।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 319 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ अल्लाह अल्लाह कितना ज़ोर है, किस क़दर पक्का वादा है

इस कलाम की तो वह महानता है कि इसकी हिफ़ाज़त के लिए हम स्वयं आएँगे और देखेंगे कि कौन इस कलाम पर बुरी नियत से हाथ डालता है। यह एक निहायत ही ज़बरदस्त आयत है और ऐसी विचित्र है कि अकेली ही क़ुरआन-ए-मजीद की सच्चाई के वर्णन का सबूत है

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरत अल्हिज्रात आयत 10 اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

यह एक निहायत ही ज़बरदस्त आयत है और ऐसी अजीब है कि अकेली ही क़ुरआन-ए-मजीद की सदाक़त के वर्णन का सबूत है। इस में कितनी ताकीदें की गई हैं। पहले इन्ना लाया गया है फिर ना की ताकीद नह्नो से की गई है और फिर आगे चल कर एक और इन्ना और लाम लाया गया है। इसलिए ताकीद पर ताकीद की गई है। कुफ़्फ़ार ने اِنَّکَ لَمَجۡنُوۡنٌ के जुमला में दूसरी ताकीद से काम लेकर ठट्ठा किया था। इस के उत्तर में अल्लाह तआला ताकीद के चार मार्ग धारण करता है और फ़रमाता है : اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ । सुनो! हमने हाँ वास्तव में हम ने ही इस सम्मान और प्रतिष्ठा वाले कलाम को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर उतारा है और हम अपनी ज़ात की क़सम खाकर कहते हैं कि वास्तव में हम उसकी स्वयं हिफ़ाज़त करेंगे। अल्लाह अल्लाह कितना ज़ोर है। किस क़दर पक्का वादा है।

इस आयत के सम्बन्ध में यह लतीफ़ा भी याद रखने के योग्य है कि कुफ़्फ़ार के तंज़ में एक यह अर्थ भी पाए जाते हैं कि ऐसा बड़ा ज़बरदस्त कलाम जिसने दुनिया को शरफ़ प्रदान करना है इस के साथ तो फ़रिश्ते भी आने चाहीए थे। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हे नादानो! तुम फ़रिश्ते कहते हो। इस कलाम की तो वह महानता है कि उसकी हिफ़ाज़त के लिए हम स्वयं आएँगे और देखेंगे कि कौन इस कलाम पर बुरी नियत से हाथ डालता है। इस का यह

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

प्रश्न उत्तर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (भाग-5)

इंशोरंस करवाने के बारे में इस्लामी हुक्म क्या है

नोट : सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विभिन्न वक़्तों में अपने लेखों और एम.टी.ए के विभिन्न प्रोग्रामों में महत्वपूर्ण विषयों के बारे में जो आदेश फ़रमाते हैं, उनमें से कुछ पाठकों के लाभ के लिए अल्फ़ज़्ल इंटरनैशनल के धन्यवाद के साथ प्रकाशित किए जा रहे हैं।(सम्पादक)

प्रश्न : एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में पूछा कि कारोबार में अलग-अलग किस्म के मुफ़ादात के हुसूल नीज़ आकस्मिक नुक़्सानात से बचने के लिए इंशोरंस करवाने के बारे में इस्लामी हुक्म क्या है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने अपने पत्र तिथि 11 अप्रैल 2016 ई. में जो उत्तर अता फ़रमाया, उसे निम्नलिखित वर्णन किया जाता है। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : इंशोरंस केवल वह जायज़ है जिस पर मिलने वाली रक़म नफ़ा-ओ-नुक़्सान में शिरकत की शर्त के साथ हो और उस में जुए की सूरत न पाई जाती हो। यदि केवल नफ़ा की भागीदारी की शर्त के साथ मिले तो सूद होने की वजह से नाजायज़ है।

इसी तरह यदि पालिसी होल्डर कंपनी के साथ ऐसा मुआहिदा कर ले कि वह केवल अपनी जमा शूदा रक़म वसूल करेगा और इस पर सूद नहीं लेगा तो ऐसी इंशोरंस करवाने में भी कोई हर्ज नहीं।

हज़रत मसीह मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने इंशोरंस और बीमा के प्रश्न पर फ़रमाया : "सूद और जुए को अलग कर के दूसरे इक़रारों और ज़िम्मेदारियों को शरीयत ने सही क़रार दिया है। जुए में ज़िम्मेदारी नहीं होती। दुनिया के कारोबार में ज़िम्मेदारी की ज़रूरत है।" (अख़बार बदर नंबर 10 भाग 2, 27 मार्च 1903 ई. पृष्ठ 76)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी एक तक़रीर में फ़रमाया : "यदि कोई कंपनी यह शर्त करे कि बीमा कराने वाला कंपनी के फ़ायदे और नुक़्सान में शामिल होगा तो फिर बीमा कराना जायज़ हो सकता है।"

(अल् फ़ज़ल 7 जनवरी 1930 ई.)

"एक ख़त के उत्तर में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा या कि यह बात दरुस्त नहीं कि हम इंशोरंस को सूद की मलूनी की वजह से नाजायज़ क़रार देते हैं। कम से कम मैं तो उसे इस वजह से नाजायज़ क़रार नहीं देता। इस के नाजायज़ होने की बहुत सी वजूहात हैं। जिनमें से एक यह है कि इंशोरंस के कारोबार की बुनियाद सूद पर है। और किसी चीज़ की बुनियाद सूद पर होना और किसी चीज़ में मेल सूद का होना उनमें बहुत बड़ा अंतर है। गर्वनमैंट के क़ानून के अनुसार कोई इंशोरंस कंपनी मुल्क में जारी नहीं हो सकती जब तक एक लाख की सिक्योरिटी गर्वनमैंट न ख़रीदे। अत: उस जगह मिलावट का प्रश्न नहीं बल्कि अनिवार्यता का प्रश्न है।

(2) दूसरे इंशोरंस का उसूल सूद है। क्योंकि शरीयत इस्लामीया के अनुसार इस्लामी उसूल यह है कि जो कोई रक़म किसी को देता है या वह भेंट है या अमानत है या शराकत है या क़र्ज़ है। भेंट है नहीं। अमानत भी नहीं, क्योंकि अमानत में कमी बेशी नहीं हो सकती। यह शराकत भी नहीं, क्योंकि कंपनी के नफ़ा और नुकसान की ज़िम्मेदारी और इस के चलाने के इख़तियार में पालिसी होल्डर शरीक नहीं। हम उसे क़र्ज़ ही क़रार दे सकते हैं और वास्तव में यह होता भी क़र्ज़ ही है। क्योंकि इस रुपया को इंशोरंस वाले अपने इरादा और इच्छा से काम पर लगाते हैं और इंशोरंस के काम में घाटा होने की सूरत में रुपया देने वाले पर कोई ज़िम्मेवारी नहीं डालते। अत: यह क़र्ज़ है और जिस क़र्ज़ के बदले में किसी वक़्त समझौते से पूर्व इसके अंतर्गत कोई नफ़ा हासिल हो उसे शरीयत इस्लामिया की दृष्टी से सूद कहा जाता है। अत: इंशोरंस का उसूल ही सूद पर आधारित है।

(3) तीसरे इंशोरंस का उसूल इन समस्त उसूलों को जिन पर इस्लाम सोसाइटी की बुनियाद रखना चाहता है बातिल करता है। इंशोरंस को पूर्णता रायज कर देने के बाद सहयोगी आपसी है, हमदर्दी और भाई चारे का तत्व दुनिया से नष्ट हो जाता है।"

(अख़बार अल् फ़ज़ल क़ादियान तिथि 18 सितंबर 1934 पृष्ठ 5)

कुछ मुल्कों में हुकूमती क़ानून के अधीन इंशोरंस करवाना लाज़िमी कार्य होता है। ऐसी इंशोरंस करवाना जायज़ है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो से एक दोस्त ने 25 जून 1942 ई. को प्रश्न किया कि यू. पी गर्वनमैंट ने हुक्म दिया है कि हर व्यक्ति जिस के पास कोई मोटर गाड़ी है वह उस का बीमा किराए क्या यह जायज़ है?

हुज़ूर ने फ़रमाया : "इस के सम्बन्ध में भी याद रखना चाहीए कि ये हुक्म केवल यू.पी गर्वनमैंट का ही नहीं बल्कि पंजाब में भी गर्वनमैंट का यही हुक्म है। यह बीमा चूँकि क़ानून के अधीन किया जाता है और हुकूमत की तरफ़ से उसे जबरी क़रार दिया गया है इस लिए अपने किसी ज़ाती फ़ायदा के लिए नहीं बल्कि हुकूमत की इताअत की वजह से यह बीमा जायज़ है।"

(अल् फ़ज़ल 4 नवंबर 1961 ई. फ़र्मूदा 25 जून 1942 ई.)

इंशोरंस के सम्बन्ध में मज्लिस इफ्ता ने निम्नलिखित सिफ़ारिश हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रहमहुल्लाह की ख़िदमत अक़्दस में पेश की जिसे हुज़ूर अनवर 23 जून 1980 ई. को मंज़ूर फ़रमाया : "हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़लीफ़ सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के फतावा के अनुसार जब तक सौदे सूद और जुए से पाक न हो बीमा कंपनीयों से किसी किस्म का बीमा करवाना जायज़ नहीं है। यह फतावी मुस्तक़िल नौईयत के और न बदला जाने वाला हैं जबकि समय समय पर इस बात की छानबीन हो सकती है कि बीमा कंपनीयां अपने बदलते हुए क़वानीन और तरीक़-ए-कार के नतीजा में जुए और सूद के अनासिर से किस हद तक पाक हो चुकी हैं।

मज्लिस इफ्ता ने इस पहलू से बीमा कंपनीयों के मौजूदा तरीक़-ए-कार पर नज़र की है और इस नतीजे पर पहुंची है कि जबकि इस समय प्रचलति वैश्विक आर्थिक निज़ाम की वजह से किसी कंपनी के लिए यह संभव नहीं कि वह अपने कारोबार में क्लीन सूद से दामन बचा सके लेकिन अब कंपनी और पालिसी होल्डर के मध्य ऐसा मुआहिदा होना संभव है जो सूद और जुए के अंश से पाक हो। इस लिए इस शर्त के साथ बीमा करवाने में हर्ज नहीं कि बीमा करवाने वाला कंपनी से अपनी जमा शूदा रक़म पर कोई सूद वसूल न करे।"

(रजिस्टर फ़ैसलाजात मज्लिस इफ्ता पृष्ठ 60 अप्रकाशित)

☆ ☆ ☆ ☆

126वां जलसा सालाना क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 126वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 24, 25 और 26 दिसंबर 2021 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथि की मंज़ूरी प्रदान फ़रमाई है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नीयत करके तैयारी शुरू कर दें। अल्लाह तआला हम सबको इस लिल्लाही जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। जलसा सालाना के हर लिहाज़ से सफ़ल होंने और बाबरकत होने तथा पवित्र रूहों की हिदायत का कारण बनने के लिए दुआएं जारी रखें। जज़ाकमुल्ला।

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मर्कज़िया क़ादियान)

ख़ुत्ब: जुमअ:

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फिर अल्लाह का नाम ले कर कुदाल चलाया और फिर एक शोला निकला जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फिर اَللّٰہُ اَکْبَرْ कहा

और फ़रमाया इस दफ़ा मुझे फ़ारस की कुंजियाँ दी गई हैं और मदायन के सफ़ैद महल मुझे दिखाई दे रहे हैं

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

"अल्लाह की क़सम अल्लाह जिस क़ौम को यह (दौलत) अता फ़रमाता है तो उनमें आपस में द्वेष और घृणा बढ़ जाती है और जिस क़ौम में आपस में द्वेष बढ़ जाए तो उनमें फिर गृहयुद्ध आरंभ हो जाती है।" (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो)

मदायन, मा सबज़ान और खोज़िस्तान की विजय, तथा जलूला का युद्ध, रा महर मज़ और तुस्तर में होनी वाली घटनाओं का वर्णन

पाँच मरहूमीन आदरणीया प्रोफ़ैसर सय्यद हसनीम सईद साहिबा पत्नी मुहम्मद सईद साहिब (लाहौर), आदरणीय दाऊद सुलेमान बट साहिब (जर्मनी), आदरणीया ज़ाहिदा प्रवीण साहिबा

पत्नी ग़ुलाम मुस्तफ़ा ऐवान साहिब (ढपई ज़िला स्यालकोट), आदरणीय राना अब्दुल वहीद साहिब (लंदन), आदरणीय अल्हाज मीर मुहम्मद अली साहिब (बंगलादेश) का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 30 जुलाई 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन चल रहा था और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने की जो जंगें थीं उनका वर्णन हो रहा था। मदायन की विजय के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) में लिखा है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में इस की भविष्यवाणी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला के इल्म से फ़रमाई थी। इस का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि

"ख़ंदक़ खोदते खोदते एक जगह से एक पत्थर निकला जो किसी तरह टूटने में नहीं आता था और सहाबा का यह हाल था कि वे तीन दिन के निरंतर भूखे रहने से सख़्त निढाल हो रहे थे। आख़िर तंग आकर वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि एक पत्थर है जो टूटने में नहीं आता। इस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का भी यह हाल था कि भूख का कारण से पीठ पर पत्थर बांध रखा था परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तुरंत वहां तशरीफ़ ले गए और एक कुदाल ले कर अल्लाह का नाम लेते हुए इस पत्थर पर मारी। लोहे के लगने से पत्थर में से एक शोला निकला जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने ज़ोर के साथ अल्लाहु अकबर फ़रमाया और फ़रमाया कि मुझे शाम देश की कुंजियाँ दी गई हैं और ख़ुदा की क़सम! इस वक़्त शाम के लाल महल मेरी आँखों के सामने हैं। इस मार से वह पत्थर किसी क़दर चोट खा गया। दूसरी दफ़ा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने फिर अल्लाह का नाम लेकर कुदाल चलाई और फिर एक शोला निकला जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फिर अल्लाहु अकबर फ़रमाया और फ़रमाया इस दफ़ा मुझे फ़ारस की कुंजियाँ दी गई हैं और मदायन के सफ़ैद महल मुझे नज़र आ रहे हैं। इस दफ़ा पत्थर किसी क़दर अधिक चोट खा गया। तीसरी दफ़ा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फिर कुदाल मारी जिसके नतीजा में फिर एक शोला निकला और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अल्लाहु अकबर फ़रमाया और फ़रमाया अब मुझे यमन की कुंजियाँ दी गई हैं और ख़ुदा क़सम! सनआ के दरवाज़े मुझे इस वक़्त दिखाए जा रहे हैं। इस दफ़ा वह पत्थर बिल्कुल चोट खा कर अपनी जगह से गिर गया और एक रिवायत में यूं है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हर अवसर पर बुलंद आवाज़ से तकबीर कही और फिर बाद में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के दरयाफ़त करने पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने यह स्वप्न वर्णन फ़रमाया और मुस्लमान इस अस्थाई रोक को दूर कर के फिर अपने काम में व्यस्त हो गए।" अर्थात पत्थर तोड़ने का जो काम था (कर के) फिर काम में व्यस्त हो गए, फिर ख़ंदक़ की खुदाई शुरू हो गई।

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ये दृश्य आलम-ए-कशफ़ से सम्बन्ध रखते थे। इसलिए इस तंगी के वक़्त में अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मुस्लमानों की भविष्य की विजय और धन दौलत के दृश्य दिखा कर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में आशा और ख़ुशी की रूह पैदा फ़रमाई परन्तु वास्तव में यह समय ऐसा तंगी और तकलीफ़ का वक़्त था कि मुनाफ़क़ीन मदीना ने इन वादों को सुन कर मुस्लमानों पर उपहास किया कि घर से बाहर क़दम रखने की ताक़त नहीं और क़ैसर और किस्रा की महलों के सवप्न देखे जा रहे हैं परन्तु ख़ुदा के इल्म में ये सारी नेअमतें मुस्लमानों के लिए मुक़द्दर हो चुकी थीं। इसलिए ये वादे अपने-अपने वक़्त पर अर्थात कुछ तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आख़िरी दिनों में और ज़्यादा तर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के खलिफ़ा के ज़माना में पूरे हो कर मुस्लमानों के ईमान में बढ़ोतरी और संतुष्टि का कारण हुए।''

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए. पृष्ठ 577-578)

मदायन की विजय का जो वादा है यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर-ए-ख़िलाफ़त में हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथों पूरा हुआ जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दिखाया गया था कि मदायन विजय होगा। यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में पूरा हुआ। क़ादसिया को विजय करने के बाद इस्लामी लश्कर ने बाबुल को विजय किया। बाबुल मौजूदा इराक़ का पुराना शहर था। बाबुल को विजय करने के बाद कूसा नाम के एक तारीख़ी शहर के स्थान पर पहुंचे। कूसा बाबुल का निकटी इलाक़ा है। यह वह जगह थी जहां हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को नमरूद ने क़ैद किया था और क़ैद-ख़ाने की जगह उस वक़्त तक सुरक्षित थी। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु जब वहां पहुंचे और क़ैद-ख़ाने को देखा तो क़ुरआन-ए-करीम की आयत पढ़ी। تِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ (आले इम्रान141) अर्थात यह दिन ऐसे हैं कि हम उन्हें लोगों के मध्य अदलते बदलते रहते हैं ताकि वे नसीहत पकड़ें। कूसा से आगे बढ़े तो बहुर सीर नामक एक जगह पर पहुंचे। यह इराक़ के शहर मदायन के उस हिस्सा का नाम है जो दजला का दरिया के मग़रिबी किनारे पर स्थित है। यहां किस्रा का शिकारी शेर रहता था। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु का लश्कर क़रीब पहुंचा तो उन्होंने इस दरिंदे को लश्कर पर छोड़ दिया। शेर गरज कर लश्कर पर हमला-आवर हुआ। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई हाशिम बिन अबी वक्क़ास लश्कर के हर प्रथम दस्ते के अफ़्सर थे। उन्होंने शेर पर तलवार से ऐसा वार किया कि शेर वहीं ढेर हो गया। फिर उस के बाद मदायन का युद्ध भी हुआ। मदायन भी इराक़ में है की location यह है कि बग़दाद से कुछ फ़ासले पर दक्षिण की तरफ़ दजला का दरिया के किनारे स्थित है। इस का नाम मदायन रखने का कारण क्या है? क्योंकि यहां के बाद अन्य कई शहर आबाद हुए थे इसलिए अरबों ने उसे मदायन अर्थात कई शहरों का संग्रह कहना शुरू कर दिया। मदायन किस्रा का पाया तख़्त था। यहां पर उस के सफ़ैद महल थे। मुस्लमानों और मदायन के मध्य दजला का दरिया की बाधा थी। ईरानियों ने दरिया के समस्त पुल तोड़ दिए। तारीख़ तिब्री में है कि हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कश्तियां तलाश

कीं कि वे दरिया को पार कर सकें लेकिन मालूम हुआ कि वे लोग कश्तियों पर क़ाबिज़ हो चुके हैं। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु चाहते थे कि मुस्लमान दरिया पार करें लेकिन वे मुस्लमानों की हमदर्दी में ऐसा नहीं करते थे। इसलिए कुछ देहाती लोगों ने भी दरिया उबूर करने का रास्ता बताया कि इस जगह से चले जाएं तो आसानी से कर सकते हैं जबकि हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस पर भी अमल नहीं किया। इसी दौरान दरिया में बाढ़ भी आ गई। एक रात आप रज़ियल्लाहु अन्हो को स्वप्न दिखाया गया कि मुस्लमानों के घोड़े पानी में दाख़िल हुए हैं और दरिया को पार कर लिया है हालाँकि वहां बाढ़ भी है। इस स्वप्न की पूर्ति में हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने दरिया को उबूर करने का पक्का निर्णय कर लिया। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़ौज से कहा मुसलमानो! दुश्मन ने दरिया की पनाह ले ली है। आओ उस को तैर कर पार करें और यह कह कर उन्होंने अपना घोड़ा दरिया में डाल दिया। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु के सिपाहियों ने अपने क़ायद की पैरवी करते हुए घोड़े दरिया में डाल दिए और इस्लामी फ़ौजें दरिया के पार उतर गईं। समक्ष की फ़ौज ने यह आश्चर्यजनक दृश्य देखा तो भय से चीख़ने लगे और भाग खड़े हुए कि "दीवान आमदनद! दीवान आमदनद!" अर्थात देव आ गए। देव आ गए। मुस्लमानों ने आगे बढ़कर शहर और किस्रा के महलों पर क़बज़ा कर लिया। मुस्लमानों की आमद से पूर्व ही किस्रा ने अपने ख़ानदान के लोगों को वहां से स्थानांतरित कर दिया था इसलिए मुस्लमानों ने आसानी के साथ शहर पर क़बज़ा कर लिया। इस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वह भविष्यवाणी पूरी हो गई जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने गज़वाए अहज़ाब के अवसर पर ख़ंदक़ खोदते हुए पत्थर पर कुदाल मारते हुए फ़रमाई थी कि मुझे मदायन के सफ़ैद महल गिरते हुए दिखाए गए हैं। इन महलों को सुनसान हालात में देख कर हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने सूर: दुख्खान की यह आयात पढ़ें कि कम كَمۡ تَرَکُوۡا مِنۡ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوۡنٍ وَّ زُرُوۡعٍ وَّ مَقَامٍ کَرِیۡمٍ وَّ نَعۡمَۃٍ کَانُوۡا فِیۡہَا فٰکِہِیۡنَ کَذٰلِکَ وَ اَوۡرَثۡنٰہَا قَوۡمًا اٰخَرِیۡنَ (الدخان: 29-26) کتن कितने ही बाग़ात और चश्मे हैं जो उन्होंने पीछे छोड़े और खेतियाँ और सम्मान के स्थान भी और नाज़ो नेअमत जिस में वे मज़े उड़ाया करते थे। इसी तरह हुआ और हमने एक दूसरी क़ौम को इस नेअमत का वारिस बना दिया।

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुक्म दिया कि शाही ख़ज़ाना और नवादिरात को एक जगह पर जमा किया जाए। इस खज़ाने में बादशाहों की यादगारें जो कि हज़ारों की संख्यां में थीं जिनमें ज़िरहें, तलवारें, ख़ंजर, ताज और शाही वस्त्र शामिल थे। सोने का एक घोड़ा था जिस पर चांदी की ज़ीन थी और सीने पर याक़ूत और ज़मुर्रद जड़े हुए थे। इसी तरह चांदी की एक ऊंटनी थी जिस पर सोने की पालान थी और महार में बेशक़ीमत याक़ूत (मौती) जड़े हुए थे। माल-ए-ग़नीमत में एक फ़र्श भी था जिसको ईरानी "बहार" कहते थे। इस की ज़मीन सोने की और वृक्ष चांदी के और फल जवाहरात के थे। यह समस्त सामान फ़ौज ने इकट्ठा किया लेकिन मुस्लमान सिपाही ऐसे रास्त सीधे और दियानतदार थे, यहां मुस्लमान सिपाहियों की दियानतदारी का पता लगता है कि जिसने जो चीज़ पाई उसी तरह ला कर अफ़्सर के पास हाज़िर कर दी। इसलिए जब सामान ला कर सजाया गया और दूर-दूर तक मैदान जगमगा उठा तो हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो को यह देखकर आश्चर्य हुआ और कहा कि जिन लोगों ने इन नवादिरात में से कुछ लिया नहीं निसंदेह इंतिहा के दियानतदार हैं। माल-ए-ग़नीमत हसब-ए-क़ायदा तक़सीम हो कर पांचवां हिस्सा खिलाफ़त के दरबार में भेजा गया। फ़र्श और पुरानी यादगारें इस हालत में भेजी गईं कि अहल-ए-अरब ईरानियों के जाह-ओ-जलाल और इस्लाम की विजय-ओ-इक़बाल का तमाशा देखें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने जब ये सामान चुने गए तो उनको भी फ़ौज की दियानत और निस्पृहता पर आश्चर्य हुआ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी बड़े आश्चर्य का प्रकटन किया कि कितने ईमानदार सिपाही हैं। मौहल्लिम नाम का एक व्यक्ति मदीना में था जो लम्बे क़द वाल और ख़ूबसूरत था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हुक्म दिया कि नौशेरवां के वस्त्र उस को ला कर पहनाए जाएं। ये वस्त्र विभिन्न हालतों के थे। इसलिए समस्त वस्त्र उसे बारी बारी पहनाए गए। इन वस्त्र की ख़ूबसूरती को देखकर लोग हैरान रह गए। इस तरह वह फ़र्श जिसका नाम "बहार" था उस को भी तक़सीम करवा दिया गया।

(उद्धरित सीरत अमीरुल मौमनीन उमर बिन ख़त्ताब अज़ अलसलाबी, पृष्ठ 413 से 417 दारुल प्रसिद्ध बेरूत 2007 ई.) (उद्धरित अज़ फ़ारूक़ अज़ शिब्ली नुमानी, पृष्ठ 100 से 103 इदारा इस्लामियात 2004 ई.)(उद्धरित तारीख़ तिब्री अनुवादक, भाग द्वितीय हिस्सा द्वितीय, पृष्ठ 388 नफ़ीस एकेडेमी कराची 2004 ई.)

(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 4 पृष्ठ 553 भाग 5 पृष्ठ 88-89)

फिर जंग जलूला है जो 16 हिज्री में लड़ी गई। मदायन की विजय के बाद ईरानियों ने जलूला में जमा हो कर मुक़ाबले की तैयारियां शुरू कर दीं। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हाशिम बिन उत्बा को बारह हज़ार के लश्कर के साथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के हुक्म पर ईरानी लश्कर से मुक़ाबले के लिए भेजा। जलूला ईराक का शहर है जो बग़दाद से ख़ुरासान जाते हुए रास्ते पर पड़ता है। यहां मुस्लमानों और फ़ारसियों के मध्य जंग हुई। मुस्लमान जब यहां पहुंचे तो उन्होंने शहर का घेराव कर लिया। महीनों घेराव रहा। ईरानी समय समय पर क़िला से बाहर निकल कर हमला करते रहे। इस तरह एसी (80) युद्ध हुए। मुस्लमानों ने जलूला की विजय का हाल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को लिखा और यह भी लिखा कि हज़रत काअका रज़ियल्लाहु अन्हो हुल्वान में रहते हैं। तथा पत्र में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से अजम वालों का पीछा करने प्रबंध माँगा गया परन्तु आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह बात मंज़ूर नहीं की कि पीछा नहीं करना। पीछे नहीं जाना बल्कि फ़रमाया मैं चाहता हूँ कि स्वाद-ए-इराक़ और ईरान के पहाड़ के मध्य दीवार बाधा होती ताकि न ईरानी हमारी तरफ़ आते और न हम उनके क्षेत्रों में जाते। हमारे लिए सवाद इराक़ का देहाती इलाक़ा काफ़ी है। मैं माल-ए-ग़नीमत हासिल करने पर मुस्लमानों की सलामती को तर्जीह देता हूँ। इस बात का मुझे कोई शौक़ नहीं कि माल-ए-ग़नीमत इकट्ठा करूँ। मुस्लमानों की हिफ़ाज़त, उनकी जान की हिफ़ाज़त ज़्यादा ज़रूरी है।

एक रिवायत के अनुसार हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ुज़ाई बिन अम्र दुवेली के पास पांचवां भाग में से सोने चांदी के बर्तन और कपड़े और अबू मुफ़ज़्ज़िर असवद के हाथ क़ैदी भिजवाए। दूसरी रिवायत के अनुसार पांचवां भाग क़ुज़ाई और अबू मुफ़ज़्ज़िर के हाथों भेजा गया था और इस का हिसाब ज़ियाद बिन अबू सुफ़यान के माध्यम से भेजा गया क्योंकि वह हिसाब किताब के मुंशी थे और उसे रजिस्टरों में सुरक्षित रखते थे। जब ये सारा कुछ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास पहुंचा तो ज़याद ने माल-ए-ग़नीमत के बारे में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से बात चीत की और इस की समस्त तफ़सीलात वर्णन की। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया: क्या तुम मुस्लमानों के सामने खड़े हो कर इस को वर्णन कर सकते हो। ये तफ़सीलात जो मुझे बता रहे हो। ज़ियाद ने उत्तर दिया ख़ुदा की क़सम समस्त ज़मीन पर आप रज़ियल्लाहु अन्हो से ज़्यादा मेरे दिल में किसी का डर नहीं और जब आपके सामने मैंने वर्णन कर दिया तो औरों के सामने क्यों नहीं वर्णन कर सकूँगा। इसलिए हज़रत ज़याद ने लोगों के सामने खड़े हो कर समस्त हालात वर्णन किए और मुस्लमानों ने जो कारनामे सरअंजाम दिए थे उनका भी वर्णन किया कि किस तरह जंग हुई, किस तरह माल-ए-ग़नीमत हाथ आया, तथा कहा मुस्लमान इस बात की इजाज़त चाहते हैं कि वे दुश्मन के मुल्क में आगे तक दुश्मनों का पीछा करें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनकी तक़रीर सुन कर फ़रमाया यह बहुत बड़ा वक्ता है। ज़याद ने कहा हमारी फ़ौज ने अपने कारनामों के माध्यम से हमारी ज़बान खोल दी है।

एक रिवायत में है कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास पांचवां भाग प्रस्तुत किया गया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया यह इस क़दर अधिक माल-ए-ग़नीमत है कि किसी छत तले नहीं समा सकेगा। इस लिए मैं बहुत जल्द इस को तक़सीम कर दूँगा। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन रज़ियल्लाहु अन्हो और अब्दुल्लाह बिन अर्क़म मस्जिद के सेहन में इस माल की रात-भर चौकीदारी करते रहे। माल आया मस्जिद के सेहन में रखा गया तो ये दो सहाबा उस की हिफ़ाज़त करते रहे। जब सुबह हुई तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो लोगों के साथ मस्जिद में आए और माल-ए-ग़नीमत से कपड़ा उठाया गया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने याक़ूत, ज़बरजद और बेशक़ीमत जवाहरात देखे और रौ पड़े। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा : हे अमीरुल मौमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हो आप रज़ियल्लाहु अन्हो क्यों रौ रहे हैं। अल्लाह की क़सम यह तो शुक्र का स्थान है। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया अल्लाह की क़सम! मुझे इस चीज़ ने नहीं रुलाया। अल्लाह की क़सम अल्लाह जिस क़ौम को यह अता फ़रमाता है तो उनमें आपस में द्वेष और घृणा बढ़ जाती है। इस ख़्याल ने मुझे रुलाया है कि यह दौलत जो तुम्हारे पास आ रही है इस से कहीं तुम लोगों के मध्य भाई चारे की बजाय द्वेष और घृणा न बढ़ जाए और जिस क़ौम में आपस में द्वेष बढ़ जाए तो उनमें फिर गृहयुद्ध शुरू हो जाती है। (उद्धरित तारीख तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 468 से 471दारुल क़ुतुब अलालमी बेरूत 2012 ई.)(उद्धरित सीरत अमीरुल मौमेनीन उमर बिन ख़त्ताब अज़ सलाबी, पृष्ठ 420-421 दारुल प्रसिद्ध बेरूत 2007 ई.)(उद्धरित अज़ फ़ारूक़ अज़ शिबली नुमानी, पृष्ठ 104 इदारा इस्लामियात 2004 ई.)

यह बड़े ग़ौर और फ़िक्र वाली बात है और यह अस्तग़फ़ार करने वाली बात भी है यह जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने बयान फ़रमाई है और यही हम देख रहे हैं कि मुस्लमानों में द्वेष और घृणा दौलत के आने के साथ-साथ बढ़ता ही चली गई। जिनके पास तेल की दौलत है उनमें भी है या इन्फ़िरादी तौर पर देखें तो जिसके पास कुछ और दौलत आई है तब भी यही हाल है। तक़्वा में कमी है।

मदायन की जंग के दौरान शाह ईरान यज़दरज पाया तख़्त मदायन छोड़ कर अपने ख़ानदान और कर्मचारियों के साथ हुल्वान को रवाना हो गया था। यज़दरज जलूला की शिकस्त की ख़बर पहुंची तो वह हुलवान छोड़ कर रे को चला गया और खसरों शनूम को जो एक सम्मानित अफ़्सर था कुछ रसालों के साथ हुल्वान की हिफ़ाज़त के लिए छोड़ दिया, कुछ फ़ौजी दस्तों के साथ वहां छोड़ दिया । हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ुद जलूला में ठहरे और कइ को हुल्वान की तरफ़ रवाना किया। कइ उपद्रवियों के क़रीब पहुंचे जो हुल्वान से तीन मील की दूरी पर है कि ख़ुसरो शनूम मख़ूद आगे बढ़कर मुक़ाबले पर हुआ लेकिन शिकस्त खा कर भाग निकला। कइ ने हुल्वान पहुंच कर क़ियाम किया और हर तरफ़ अमन की मुनादी करा दी। निकट के रईस आ आ कर जज़िया स्वीकार करते जाते थे और इस्लाम के समर्थन में आते-जाते थे। (अल फ़ारूक़ अज़ शिबली नुमानी, पृष्ठ 106 मक्तबुल हरमेन उर्दू बाज़ार लाहौर 1437)(अलअख़बार अलतवाल, वुकअतुल कादसिया, पृष्ठ 183 दारुल क़ुतुब आलमी बेरूत 2001 ई.)

مَاسَبَذَانْ की विजय किस तरह हुई। इस बारे में आता है कि हज़रत हाशिम बिन उत्बा रज़ियल्लाहु अन्हो जो जलूला के युद्ध में लश्कर के अमीर थे वापस मदायन आ चुके थे और हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु अभी मदायन में ही रह रहे थे कि सूचना मिली कि एक ईरानी लश्कर आज़ी बिन हुर्मुज़ान मुज़ा नेतृत्व में मुस्लमानों से टक्कर लेने के लिए मैदानी इलाक़े की तरफ़ बढ़ रहा है। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह रिपोर्ट हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में भिजवा दी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह हिदायत की कि ज़िरार बिन ख़त्ताब के नेतृत्व में एक लश्कर मुक़ाबला के लिए भेजा जाए जिसके हर प्रथम सैनिकों का नेतृत्व इब्ने हुज़ैल के हाथ में हो और अब्दुल्लाह बिन वहाब रासी और मुज़ारिब बिन फ़ुलान अज्ली बाजुओं के कमांडर हों। इस्लामी लश्कर ईरानी लश्कर के मुक़ाबले के लिए रवाना हुआ और مَاسَبَذَانْ के मैदानी इलाक़े के क़रीब दुश्मन से जा मिला और हन्दफ़ स्थान पर लड़ाई हुई जिस में ईरानियों को शिकस्त हुई और मुस्लमानों ने आगे बढ़कर शहर مَاسَبَذَانْ पर क़बज़ा कर लिया। बाशिंदे शहर छोड़कर भाग गए परन्तु ज़रार बिन ख़त्ताब ने उन्हें दावत दी कि आकर अमन से अपने शहर में आबाद हो जाएं। उन्होंने दावत स्वीकार कर ली और अपने घरों में आबाद हो गए।

(तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 475 दारुल क़ुतुब आलमी बेरूत 1987 ई.)

बलाज़री ने مَاسَبَذَانْ की विजय के बारे में विभिन्न रिवायात ली हैं। एक रिवायत यह है कि अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो ने निहावंद के युद्ध से वापसी पर इस शहर को बिना लड़ाई के विजय किया था। (मक़ाला' तारीख़ इस्लाम बाअहद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद नासिर साहिब, पृष्ठ 120)(फ़ुतूह अल् बुल्दान अल्लामा बलाज़री, पृष्ठ 185 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2000 ई.)

खोज़िस्तान की विजय का हाल इस प्रकार वर्णन हुआ है।खोज़िस्तान ईरान का एक राज्य है। हुर्मुज़ान के इस्लाम स्वीकार करने से पहले इसी राज्य का गवर्नर था। इस इलाक़े और इस इलाक़े के रहने वालों को ख़ूज़र कहा जाता था। इस से मुराद खोज़िस्तान के रहने वाले अह्वाज़ के निकट में फ़ारस और बस्रा और वासित और अस्फ़हान के पहाड़ों के मध्य का इलाक़ा है। 14 हिज्री में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़ौजी नुक़्ता नज़र से कुछ लाभ देखकर इराक़ में छोटे पैमाने पर एक दूसरा फ्रंट खोल दिया और उत्बा् बिन ग़ज़वान के नेतृत्व में एक छोटा सा लश्कर इस स्थान की तरफ़ रवाना फ़रमाया जहां आरम्भ में इस लश्कर के लिए बतौर छावनी शहर बस्रा की दाग़ बैल डाली। यह लश्कर न केवल इर्द-गिर्द के दुश्मन के क्षेत्रों पर विजय हासिल कर रहा था बल्कि इराक़ी जंगी मुहिम में इस रंग में मुफ़ीद हो रहा था कि निकट की ईरानी फ़ौजें आला और बड़े महाज़ पर अपने साथियों की नियमित पराजय की ख़बरें सुनकर भी उनकी सहायता के लिए नहीं जा सकती थीं। ज़्यादा मक़सद यही लगता है फ़ौज यहां बिठाने का, इस रस्ता पर क़बज़ा करने का, कि ईरानी अफ़्वाज की कमक और सहायता वहां न जाए और वे मुस्लमानों पर हमले न करते रहें। इस लश्कर के अमीर हज करने और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से मुलाक़ात के उद्देश्य से वापस हिजाज़ गए थे और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आपकी अनुपस्थिति में इस लश्कर के नेतृत्व में हज़रत मुग़ीरह बिन शौबा रज़ियल्लाहु अन्हो को दी थी। हज़रत मुग़ीरह बिन शौबा रज़ियल्लाहु अन्हो पर जब एक अख़लाक़ी जुर्म का आरोप लगाया और उसकी तहक़ीक़ात के सिलसिला में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें हटा कर के मदीना बुलाया हुआ था तो उनकी जगह हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हो को कमांडर निर्धारित किया गया था। बहरहाल तहक़ीक़ात पर हज़रत मुग़ीरह पर जो आरोप लगा था वह ग़लत साबित हुआ था। (उद्धरित तारीख़ तिब्री दोम पृष्ठ 438 से 442 दारुल क़ुतुब आलमी बेरूत 1987 ई.) (फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 116 ज़वार एकेडेमी कराची 2003 ई.) (मोअज्जमुल बुल्दान भाग 2 पृष्ठ 259-260)

रिवायात में इख़तिलाफ़ है कि सोला हिज्री या सतरह हिज्री में इस्लामी लश्कर की व्यस्तता भी काफ़ी रही और इस मैदान की जंगी सरगर्मियां भी वुसअत पकड़ गईं और मुस्लमानों ने खोज़िस्तान के प्रसिद्ध शहर आह्वाज़ पर क़बज़ा कर लिया। तिब्री के इतिहासकार ने सतरह हिज्री के वाक़ियात में बयान किया है परन्तु साथ ही लिखा है कि कुछ रिवायात से इस विजय का सन सौला हिज्री मालूम होता है। इस विजय के वर्णन में उन्होंने लिखा है कि इस वक़्त अमीर लश्कर उत्बा बिन गज़वान रज़ियल्लाहु अन्हो ही थे। लेकिन बलाज़री ने जो इस की वज़ाहत की है लिखा है कि अहवाज़ और इसके बाद की फ़ुतूहात हज़रत उत्बा बिन गज़वान रज़ियल्लाहु अन्हो के वापस तशरीफ़ ले जाने के बाद हज़रत मुग़ीरह बिन शौबा रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हो के नेतृत्व में हुईं और लिखा है कि हज़रत मुग़ीरा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अहवाज़ को विजय किया। आह्वाज़ रईस बेरूज़ नामी ने पहले तो मुक़ाबला किया परन्तु फिर सुलह कर ली। कुछ समय बाद जब हज़रत मुग़ीरा रज़ियल्लाहु अन्हो की जगह अबू मूसा अशअरी बस्रा के इलाक़े के इस्लामी लश्कर के अमीर निर्धारित हुए तो बयरूज़ के सरदार ने वादा तौड़ कर के बग़ावत कर दी। इस पर हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो मुक़ाबले के लिए निकले और लड़ाई के बाद शहर पर क़बज़ा कर लिया। यह वाक़िया सतरह हिज्री में पेश आया।

अहवाज़ के मार्के में इस्लामी फ़ौज ने बहुत से लोगों को गिरफ़्तार करके ग़ुलाम बना लिया परन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के हुक्म से सबको रिहा कर दिया गया। उन्होंने कहा कोई ग़ुलामी नहीं। सब जो क़ैदी थे सबको रिहा कर दिया। आज़ादी दे दी। तिब्री ने लिखा है कि इस इलाक़े में ईरानी दो रास्तों से मुस्लमान लश्कर पर बार-बार हमला-आवर होते थे। इन दोनों रास्तों पर दो स्थान नहर तीरा, यावर मनाज़िर छापामार ईरानियों के केंद्र थे। इन दोनों स्थानात पर मुस्लमानों ने क़बज़ा कर लिया। अधिकतर स्थानों में हमें यही नज़र आता है कि जहां मुस्लमानों को तंग किया जाता था, बार-बार हमले किए जाते थे वहीं फिर मुस्लमानों ने हमले किए और उन जगहों पर क़बज़ा किया। इसलिए बलाज़री ने लिखा है कि अबू मूसा अशअरी ने नहरे तीर को अहवाज़ के साथ विजय कर लिया और अहवाज़ की विजय के बाद आप दूसरे स्थान अर्थात मनाज़िर की तरफ़ बढ़े और शहर का घेराव कर लिया और लड़ाई शिद्दत पकड़ गई। इस मुहासिरे के दौरान में एक दिन एक मुस्लमान बहादुर मुहाजिर बिन ज़याद रोज़ा रखे हुए अपनी जान ख़ुदा तआला के हुज़ूर में क़ुर्बान करने के इरादे से दुश्मन के मुक़ाबले के लिए निकले। मुहाजिर के भाई रबी ने अमीर लश्कर अबू मूसा को सूचना कर दी कि मुहाजिर रोज़ा रखकर मैदान में जा रहे हैं। अबू मूसा ने ऐलान करवा दिया कि जिस ने रोज़ा रखा है वे या तो रोज़ा खोल दे या मैदान-ए-जंग में न जाए। मुहजिरों ने यह ऐलान सुन कर पानी के एक घूँट से रोज़ा इफ़तार किया और बोले अमीर के हुक्म की ख़ातिर ऐसा करता हूँ अन्यथा मुझे प्यास बिल्कुल नहीं है। यह कह कर हथियार उठाए और दुश्मन से लड़ते हुए शहीद हो गए। शहर-वालों ने आपका सिर काट कर महल के बुलंद कुंगुरों पर लटका दिया। घेराव लम्बा होता जा रहा था। अबू मूसा अशअरी ने शायद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के हुक्म से लश्कर का एक हिस्सा मुहाजिर के भाई रबी की कमान में मुनाज़िर के घेराव के लिए छोड़ा और ख़ुद शहर सुसकी की तरफ़ रवाना हुए। उधर रबी ने लड़ते भिड़ते शहर पर क़बज़ा कर लिया और बहुत से लोग क़ैदी बना लिए परन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के आदेशों के नतीजा में यहां भी सब क़ैदी रिहा कर दिए गए। हज़रत अबू मूसा की तरफ़ बढ़े। शहर-वालों ने पहले मुक़ाबला किया और लड़ाई के बाद शहर में कैद हो कर बैठ गए। अंतत: जब ग़िज़ा की तंगी हुई तो हथियार डाल दिए।

इन वाक़ियात की फ़ुतूहात की तफ़सील में मीर महमूद अहमद साहिब ने मक़ाले में जो तहक़ीक़ और अपना विश्लेषण किया है तो वे कहते हैं कि तिब्री और बलाज़री में असंख्य मतभेद हैं जिनका कारण शायद यह मालूम होती है कि इस इलाक़े में ईरानी सरदारों की वादा तौड़ कर के बग़ावत के नतीजा में इस्लामी लश्कर की दुबारा

जंगी नक़्ल-ओ-हरकत के वाक़ियात रिवायात में पहली मर्तबा की फ़ुतूहात के वाक़ियात से मिलकर समान हो गए हैं।

(मक़ाला' तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद नासिर साहिब, पृष्ठ 124 से 127)(तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 494 दारुल क़ुतुब अलालमी बेरूत 1987 ई.)(फ़ुतूहुल बुल्दान, पृष्ठ225-226)

फ़ुतूहात जो थीं वे, और फिर दुबारा जो अमन क़ायम करने के लिए हुआ, वे संदिग्ध हो गई हैं लेकिन बहरहाल यह उनका एक नुक़्ता-ए-नज़र है।

जंग रामुहुर्मुज़ और तुसुतुर। यज़दज्र शाह-ए-ईरान जो जलूला के युद्ध के बाद रै से होता हुआ इसतखर चला गया था। यह इस एक जगह का नाम है। अभी उसने शिकस्त नहीं मानी थी और मुस्लमानों के मुक़ाबले के लिए लोगों को ग़ैरत दिला रहा था और पूरी कोशिश में था कि इस इलाक़े खोज़िस्तान में, जहां की फ़ुतूहात का हम वर्णन कर रहे हैं, मुस्लमानों के मुक़ाबले के लिए इमदादी फ़ौज भिजवाई जाए। दूसरी वजह जो इस इलाक़े में जंग की आग तेज़ करने का कारण बनी हुई थी वह यहां के एक नामी रईस हुर्मुज़ान की मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंगी कार्रवाई थी। हुर्मुज़ान के युद्ध में शरीक हो चुका था और वहां से शिकस्त खा कर अपने वतन में आ गया था और यहां मुस्लमानों पर नियमित छापे मार रहा था।

(मक़ाला' तारीख़ इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद साहिब नासिर, पृष्ठ 127-128)(तारीख़ तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 473-494 दारुल क़ुतुब आलमी बेरूत 2012 ई.)

जलूला में मुस्लमानों की विजय के बाद ईरानी हुर्मुज़ान की नेतृत्व में रामाहुर मुज़ में जमा हुए। रामाहुर मुज़ जो है ये भी खोज़िस्तान के निकट में एक प्रसिद्ध शहर था। हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की हिदायत पर नौमान बिन मुक़र्रन को लश्कर का सरदार बना कर कूफ़ा से रवाना किया और हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो को बस्रा से रवाना किया और फ़रमाया कि जब दोनों लश्कर इकट्ठे हो जाएं तो अबू स्ब्राह बिन रोहम उनके कमांडर होंगे। नौमान बिन मुक़र्रिन की फ़ौज के बारे में जब हुर्मुज़ान को ज्ञात हुआ तो उसने मुक़ाबला किया और शदीद जंग के बाद हुर्मुज़ान शिकस्त खा कर तुसतर की तरफ़ भाग गया। तुसतर खोज़िस्तान से एक दिन की दूरी पर एक बड़ा शहर है और शहर में केद हो गया। हज़रत अबू सब्राह रज़ियल्लाहु अन्हो की नेतृत्व में इस्लामी लश्कर ने शहर का घेराव कर लिया जो कई माह तक जारी रहा। ईरानी फ़ौज बार-बार बाहर निकल कर हमला-आवर होती और वापस आकर दरवाज़े बंद कर लेती। इस तरह इस जंग में अस्सी युद्ध हुए। अंतिम मार्के में मुस्लमानों ने भरपूर शिद्दत से हमला किया। जब मुस्लमानों की तरफ़ से कैद सख़्त हो गया तो दो फ़ारसियों ने मुस्लमानों को बताया कि शहर से पानी निकलने वाले रास्ते से अंदर जा कर शहर को विजय किया जा सकता है। इसलिए मुस्लमान शहर में दाख़िल हो गए।

इस बारे में अख़बार अत्तिवाल के लेखक अबूहनीफ़ा दिनोरी ने लिखा है कि मुस्लमानों का घेराव लम्बा हो गया। एक रात शहर का एक सम्मानित व्यक्ति हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आया और अपने परिजनों और अपने माल को अमान देने के बदले में शहर में क़बज़ा करने में सहायता की पेशकश की। हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे अमान दी। फ़ुतूह अल् बुल्दान में लिखा है कि वह व्यक्ति मुस्लमान भी हो गया था। उस व्यक्ति ने हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि मेरे साथ कोई व्यक्ति भेज दें ताकि मैं उसे आगाह कर दूं। अर्थात रस्ता बताऊं कि किस तरह मुस्लमान क़िला में दाख़िल हो सकते हैं। हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़बीला बनू श्यबान में से एक व्यक्ति अशरस बिन औफ़ को उस के साथ भेजा। वे दोनों एक छोटी सी नहर में से होते हुए एक सुरंग के रास्ते से शहर में दाख़िल हुए। उसने अशरस बिन औफ़ पर एक चादर ओढ़ा दी और उसे कहा कि तुम मेरे पीछे-पीछे मेरे खादिमों की तरह आओ। वे उसे लेकर शहर के बड़े क्षेत्र में फिरा। फिर वह शहर के दरवाज़े पर गया जहां पहरेदार मौजूद थे फिर वे हुर्मुज़ान के पास पहुंचा जो कि अपने महल के दरवाज़े पर मज्लिस लगाए बैठा था। यह सब दिखाने के बाद वह उस को उसी रास्ता से वापस ले आया। अशरस बिन औफ़ ने वापस पहुंच कर हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो को सब कुछ बताया। अशरस बिन औफ़ ने कहा कि आप मेरे साथ दो सौ बहादुर भेज दें मैं पहरेदारों को क़तल कर के दरवाज़ा खुलवा दूँगा और आप बाहर से दरवाज़े से हमारे साथ मिल जाएं। इस तरह अशरस बिन औफ़ अपने साथियों समेत इस ख़ुफ़ीया रस्ते से शहर में दाख़िल हुए और पहरेदारों को क़तल कर के शहर के दरवाज़े खोल दिए। इस्लामी लश्कर अल्लाहु-अकबर के नारे बुलंद करता हुआ शहर में दाख़िल हुआ। हुर्मुज़ान नारों की आवाज़ सुनकर अपने क़िला की तरफ़ भागा जो कि इस शहर के अंदर ही मौजूद था। मुस्लमानों ने क़िला को घेर लिया। हुर्मुज़ान ऊपर से देखकर बोला कि मेरे तरकश में सौ तीर हैं। जब तक उनमें से एक तीर भी बाक़ी है मुझे कोई हाथ नहीं लगा सकता। इस के बाद यदि में गिरफ़्तार हुआ तो मेरी गिरफ़्तारी के क्या कहने। मुस्लमानों ने कहा कि फिर तुम क्या चाहते हो? उसने कहा कि मैं इस शर्त पर हथियार डालता हूँ कि मेरा फ़ैसला हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो पर छोड़ दिया जाए। हुर्मुज़ान ने हथियार फेंक दिए और ख़ुद को मुस्लमानों के हवाले कर दिया। हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो ने हुर्मुज़ान को हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो और अहनफ़ बिन केस की निगरानी में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में मदीना भिजवा दिया। जब क़ाफ़िला मदीना में दाख़िल हुआ तो उन्होंने हुर्मुज़ान को इस का अपना रेशमी वस्त्र पहनाया जिस पर सोने का काम हुआ-हुआ था। क़ैदी था लेकिन इस को वस्त्र पहना दिया जो बड़ी शान वाला वस्त्र था। उस के सिर पर हीरों से जुड़ा हुआ ताज रखा गया ताकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और मुस्लमान इस की असल शकल को देख लें। यह बताने के लिए कि देखो इतने बड़े सरदार को हमने अधीन किया है। फिर उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में पूछा तो लोगों ने बताया कि मस्जिद में हैं। वे जब मस्जिद में पहुंचे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी पगड़ी पर सिर रखकर सोए हुए थे। हुर्मुज़ान ने पूछा उमर कहाँ हैं? लोगों ने बताया कि वह सो रहे हैं। उस वक़्त मस्जिद में आपके अतिरिक्त और कोई भी नहीं था। हुर्मुज़ान ने पूछा उनके पहरेदार और दरबान कहाँ हैं? लोगों ने कहा उनको किसी पहरेदार, दरबारी, कातिब और दीवान की ज़रूरत नहीं है। हुर्मुज़ान ने सहसा कहा कि यह व्यक्ति ज़रूर कोई नबी मालूम होता है। लोगों ने कहा कि नबी तो नहीं परन्तु नबियों के तरीक़ पर ज़रूर हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो लोगों की बातों से जाग गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा क्या हुर्मुज़ान है? लोगों ने कहा हाँ। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस को और उसके वस्त्र को ध्यान से देखा और कहा मैं आग से अल्लाह तआला की पनाह में आता हूँ और अल्लाह से मदद मांगता हूँ। क़ाफ़िला के लोगों ने कहा कि यह हुर्मुज़ान है इस से बात कर लें। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कदापि नहीं। यहां तक कि वे अपना ज़रक़-बरक़ वस्त्र और ज़ेवरात उतार दे। तो उस के समस्त ज़ेवरात और शाहाना वस्त्र को उतार दिया गया। हुर्मुज़ान से बात चीत शुरू हुई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा वादा तौड़ने और धोखा देने का अंजाम देखा है। जो जंग हुई थी या उस के साथ लड़ाई हो रही थी, उस की वादा तौड़ने के कारण से हो रही थी और धोखा देने का कारण से हो रही थी। उसने कहा जाहिलियत में जब ख़ुदा हम दोनों में से किसी के साथ नहीं था तो हम तुम पर ग़ालिब थे परन्तु अब ख़ुदा की मदद तुम्हारे साथ है इसलिए अब तुम ग़ालिब हो। हुर्मुज़ान ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को यह उत्तर दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया ज़माना-ए-जाहिलीयत में तुम इस वजह से ग़ालिब थे कि तुम में एकता थी और हम में मतभेद था। एक बड़ी वजह यह भी थी कि तुम लोग इकट्ठे थे और हम में मतभेद था। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हुर्मुज़ान से पूछा। तुमने बार-बार वादा तौड़ा अब तुम क्या कारण प्रस्तुत करते हो? जैसा कि मैंने कहा मुस्लमानों ने उनके वादा तौड़ने के कारण से उनसे जंग की थी क्योंकि वे लोग जो थे वे शांतिपूर्ण पड़ोसी के रूप में पर रहना नहीं चाहते थे। हुर्मुज़ान ने कहा कि मुझे संदेह है कि आप मुझे यह बताने से पहले ही क़तल न कर दें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा डरो नहीं। इस पर हुर्मुज़ान ने पानी मांगा तो उस के लिए एक पुराने प्याले में पानी लाया गया। हुर्मुज़ान ने कहा कि में इस तरह के प्याले में पानी नहीं पियूँगा चाहे मैं प्यासा ही मर जाऊं। इसलिए उसे उस के शायान-ए-शान बर्तन में पानी दिया गया तो उस के हाथ काँपने लगे। हुर्मुज़ान ने कहा कि मुझे संदेह है कि जब मैं पानी पी रहा हूँगा तो मुझे क़तल कर दिया जाएगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया जब तक तू पानी पी नहीं ले तुझे कोई तकलीफ़ नहीं पहुँचेगी। यह सुनकर उसने पानी ज़मीन पर गिरा दिया। होशयार था, उसने कहा अच्छा पानी पीना यदि शर्त है तो मुस्लमान तो वादे के पक्के हैं। तो उसने कहा मैं पानी पीता ही नहीं और पानी ज़मीन पर गिरा दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा इसे दुबारा पानी दो और उसे प्यासा क़तल न किया जाए। सज़ा तो इस की यही थी वादा तौड़ और फ़ित्ना-ओ-फ़साद और मुस्लमानों से जंग। हुर्मुज़ान ने कहा मुझे पानी की प्यास नहीं थी मैं तो इस तरह अमान हासिल करना चाहता था। आख़िर वह सच्च बोल पड़ा। इस के बाद हुर्मुज़ान ने इस्लाम स्वीकार कर लिया और मदीना में ही रिहायश इख़तियार कर ली। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस को दो हज़ार वज़ीफ़ा निर्धारित कर दिया। (उद्धरित सीरत अमीरुल मौमेनीन उमर बिन ख़त्ताब अल्सलाबी, पृष्ठ 422 से 425 दारुल मारफ़ा बेरूत 2007 ई.)(उद्धरित अख़बार

अल् तवाल अज़ अल्लामा अबू हनीफा देनूरी, पृष्ठ 188 से 190 प्रकाशन दारुल क़ुतुब आलमी बेरूत 2001 ई.)(फ़ुतूह अल् बुल्दान, पृष्ठ 536 प्रकाशन मौअस्सा मारूफ बेरूत 1987 ई) (मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 3 पृष्ठ 19 भाग 2 पृष्ठ 34 दार सादिर बेरूत 1977 ई.)

इक्दुल फ़रीद में लिखा है कि जब हुर्मुज़ान को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास क़ैदी बना कर लाया गया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे इस्लाम की दावत दी लेकिन हुर्मुज़ान ने इंकार कर दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हुक्म दिया कि उसे क़तल कर दिया जाए। जब उसे क़तल किया जाने लगा तो उसने कहा हे अमीरुल मौमेनीन यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हो मुझे पानी पिला दें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पानी पिलाने का हुक्म दिया। जब पानी का बर्तन उस के हाथ में रखा गया तो उसने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा क्या मैं पानी पीने तक अमन में हूँ? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हाँ। इस पर हुर्मुज़ान ने पानी का बर्तन हाथ से फेंक दिया और कहा कि आप अपना वादा पूरा करें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि मैं तुझे कुछ मोहलत देता हूँ और देखता हूँ कि तू कैसे अमल करता है। जब उस से तलवार दूर कर दी गई तो हुर्मुज़ान ने कहा कि أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं, उस का कोई शरीक नहीं और यह कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस के बंदे और उस के रसूल हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हुर्मुज़ान से पूछा कि तू पहले क्यों नहीं ईमान ले आया। इस पर हुर्मुज़ान ने कहा कि हे अमीरुल मौमेनीन मुझे डर था कि लोग यह न कहें कि मैं तलवार के डर से, क्योंकि तलवार मेरे सिर पर रखी हुई थी, उसके डर से मुस्लमान हुआ हूँ। इस के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो हुर्मुज़ान ईरान पर लश्कर कुशी में मश्वरा किया करते थे और उस की राय के अनुसार अमल किया करते थे।

(उल-अक़ददुल फ़रीद, भाग दोम, पृष्ठ 144 प्रकाशन दारुल अर्क़म बेरूत 1999 ई.)

फिर वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को मशवरा देने वाला भी बन गया।

यह भी संदेह किया जाता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत में हुर्मुज़ान का हाथ था। (मक़ाला "तारीख़ इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद साहिब नासिर, पृष्ठ 135) लेकिन हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो इस संदेह को दरुस्त नहीं समझते थे। इसलिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो क़िसास की आयत की तफ़सीर में वर्णन फ़रमाते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास एक मुस्लमान लाया गया जिसने एक अनुबंध काफ़िर को जो इस्लामी हुकूमत की रियाया बन चुका था क़तल कर दिया था। जिससे अनुबंध हुआ-हुआ था, वादा हुआ-हुआ था उस का क़तल कर दिया था तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस के क़तल किए जाने का आदेश दिया और फ़रमाया कि मैं अह्द पूरा करने वालों में से सबसे ज़्यादा अह्द की रक्षा करने वाला हूँ। जिससे अह्द किया उसको क्यों क़तल किया, इसलिए सज़ा है। मुस्लमान को भी क़तल किया गया। इसी तरह तिब्रानी ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो की निसबत रिवायत की है कि एक मुस्लमान ने एक ज़िम्मी को क़तल कर दिया तो आपने उस मुस्लमान के क़तल किए जाने का हुक्म दिया। कुछ लोग कहते हैं कि एक हदीस में आता है कि لَا يُقْتَلُ مُؤْمِنٌ بِكَافِرٍ कि कोई मोमिन किसी काफ़िर के बदला में क़तल नहीं किया जाएगा परन्तु सारी हदीस देखने से बात हल हो जाती है। हदीस के असल शब्द ये हैं कि لَا يُقْتَلُ مُؤْمِنٌ بِكَافِرٍ وَلَا ذُوْعَهْدٍ فِيْ عَهْدِهٖ इस हदीस का यह दूसरा फ़िक़रा कि وَلَا ذُوْعَهْدٍ فِيْ عَهْدِهٖ इस के अर्थों को हल कर देता है कि यदि इसके यह माने हूँ कि काफ़िर के बदला में मुस्लमान नहीं मारा जाए तो फिर ذُوْعَهْدٍ के यह माने करने होंगे कि وَلَا ذُوْعَهْدٍ بِكَافِرٍ कि किसी वादा करने वाले को भी काफ़िर के बदले में क़तल नहीं किया जाए। हालाँकि इसे कोई भी स्वीकार नहीं करता। अत: यहां काफ़िर से मुराद मुहारिब काफ़िर है न कि आम काफ़िर। जंग करने वाले काफ़िर (मुराद) हैं न कि आम काफ़िर। तभी फ़रमाया कि ज़िम्मी काफ़िर भी मुहारिब काफ़िर के बदला में नहीं मारा जाएगा।

अब हम सहाबा का तरीक़-ए-अमल देखते हैं तो हमें मालूम होता है कि सहाबा भी ग़ैर मुस्लिम के क़ातिल को क़तल की सज़ा ही देते थे। इसलिए तिब्री में कुमाज़ बान बिन हुर्मुज़ अपने पिता के क़तल का वाक़िया बयान करता है कि हुर्मुज़ान एक ईरानी रईस और मजूसी मज़हब का था और हज़रत उमर ख़लीफ़ा सनी रज़ियल्लाहु अन्हो के क़तल की साज़िश में शरीक होने का संदेह उस पर किया गया। इस पर बिना तहक़ीक़ जोश में आकर उबैयदुल्लह बिन उमर ने उस को क़तल कर दिया। वह कहता है कि ईरानी लोग मदीना में एक दूसरे से मिले जुले रहते थे। जैसा कि नियम है कि दूसरे मुल्क में जाकर देश प्रेम स्पष्ट हो जाता है तो एक दिन फ़िरोज़ जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का क़ातिल था, मेरे बाप से मिला और उस के पास एक ख़ंजर था जो दोनों तरफ़ से तेज़ किया हुआ था। मेरे बाप ने इस ख़ंजर को पकड़ लिया और इस से दरयाफ़त किया कि इस मुल्क में तू इस ख़ंजर से किया काम लेता है अर्थात यह मुलूक तो अमन का मुलक है इस में ऐसे हथियारों की क्या ज़रूरत है। उसने कहा कि मैं इस से ऊंट हँकाने का काम लेता हूँ। जब वे दोनों आपस में बातें कर रहे थे तो उस वक़्त किसी ने उनको देख लिया और जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मारे गए, शहीद किए गए तो उसने बयान किया कि मैंने स्वयं हुर्मुज़ान को यह ख़ंजर फ़िरोज़ को पकड़ाते हुए देखा था। इस पर हुर्मुज़ान का बेटा कहता है कि उबैयय जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के छोटे बेटे थे उन्होंने जा कर मेरे बाप को क़तल कर दिया। जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ख़लीफ़ा हुए तो उन्होंने मुझे बुलाया और उबैय को पकड़ कर मेरे हवाले कर दिया और कहा कि हे बेटे! ये तेरे बाप का क़ातिल है और तू हमारी मुक़ाबले इस पर ज़्यादा हक़ रखता है। अत: जा और उस को क़तल कर दे। मैंने उस को पकड़ लिया और शहर से बाहर निकला। रास्ता में जो व्यक्ति मुझे मिलता मेरे साथ हो जाता लेकिन कोई व्यक्ति मुक़ाबला नहीं करता। वह मुझसे केवल इतनी दरख़ास्त करते थे कि मैं उसे छोड़ दूं। अत: मैंने सब मुस्लमानों को संबोधित करके कहा कि क्या मेरा हक़ है कि मैं उसे क़तल कर दूं? सबने उत्तर दिया कि हाँ तुम्हारा हक़ है कि उसे क़तल कर दो और फिर उबैय को बुरा-भला भी कहने लगे कि उसने ऐसा बुरा काम किया है। फिर मैंने दरयाफ़त किया कि क्या तुम लोगों को हक़ है कि उसे मुझसे छुड़ा लो? उन्होंने कहा नहीं कदापि नहीं और फिर उबैय को बुरा-भला कहा कि उसने बिना सबूत उस के बाप को क़तल कर दिया है। इस पर मैंने ख़ुदा और उन लोगों की ख़ातिर उस को छोड़ दिया। इतनी सिफ़ारिशें जब हो गईं। पूछ लिया, सवाल उत्तर हो गए तो कहते हैं मैंने अल्लाह और उस के लोगों की ख़ातिर उस को छोड़ दिया और मुस्लमानों ने प्रसन्नता से मुझे इस ख़ुशी में अपने कंधों पर उठा लिया और ख़ुदा तआला की क़सम मैं अपने घर तक लोगों के नारों और कंधों पर पहुंचा और उन्होंने मुझे ज़मीन पर क़दम तक नहीं रखने दिया। इस रिवायत से साबित है कि सहाबा का तरीक़ अमल भी यही रहा है कि वे ग़ैर मुस्लिम के मुस्लिम क़ातिल को सज़ाए क़तल देते थे और यह भी साबित होता है कि ख़ाह किसी हथियार से कोई व्यक्ति मारा जाए वह मारा जाएगा। इसी तरह यह भी साबित होता है कि क़ातिल को गिरफ़्तार करने वाली और उस को सज़ा देने वाली हुकूमत ही होती है। जबकि यहां भी यह है कि मुस्लमान हो गया था लेकिन यदि ये ग़ैर मुस्लिम भी हो तब भी ये सारी जो पिछली बातें बयान हुई हैं उनसे भी यही लगता है कि ग़ैर मुस्लिम के साथ भी वैसा ही सुलूक हो जैसा मुस्लमान के क़ातिल के साथ होगा। खासतौर पर जब अनुबंध हुआ हो। इसी तरह यह भी साबित होता है कि क़ातिल को गिरफ़्तार करने वाली और उस को सज़ा देने वाली हुकूमत ही है। हर व्यक्ति नहीं दे सकता हुकूमत देती है क्योंकि इस रिवायत से ज़ाहिर है कि उबैय बिन उमर को गिरफ़्तार भी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने ही किया था और उस को क़तल करने के लिए हुर्मुज़ान के बेटे के सपुर्द भी उन्होंने ही किया था। न हुर्मुज़ान के किसी वारिस ने उस पर मुक़द्दमा चलाया और न उसने गिरफ़्तार किया। हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि इस जगह इस संदेह का अज़ाला कर देना भी ज़रूरी मालूम होता है कि क़ातिल को सज़ा देने के लिए आए मक़्तूल के वारिसों के सपुर्द करना चाहीए जैसा कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने किया या ख़ुद हुकूमत को सज़ा देनी चाहीए। इस लिए याद रखना चाहिए कि यह विषय एक आंशिक विषय है इसलिए उस को इस्लाम ने हर ज़माना की ज़रूरत के अनुसार अमल करने के लिए छोड़ दिया है। क़ौम अपनी सभ्यता और हालात के अनुसार जिस तरीक़ को ज़्यादा मुफ़ीद देखे इख़तियार कर सकती है और इस में कोई संदेह नहीं कि ये दोनों तरीक़ ही ख़ास ख़ास हालात में मुफ़ीद होते हैं। (उद्धरित तफ़सीर कबीर, भाग 2, पृष्ठ 359 से 361)

यह वर्णन अभी चल रहा है। आइन्दा भी इंशा-ए-अल्लाह चलेगा। इस वक़्त में कुछ मरहूमीन का भी वर्णन करना चाहता हूँ और फिर उनका जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा।

उनमें से पहला वर्णन आदरणीया प्रोफ़ैसर सय्यदा नसीम सईद साहिबा का है जो मुहम्मद सईद साहिब की पत्नी थीं और हज़रत अल्हाज हाफ़िज़ डाक्टर सय्यद शफ़ी साहिब मुहक़्क़िक़ देहलवी की बेटी थीं। पिछले दिनों 88 वर्ष की आयु में पाकिस्तान में उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैही राजेऊन। आपके पिता हज़रत अल्हाज हाफ़िज़ डाक्टर सय्यद शफ़ी अहमद मुहक़्क़िक़ देहलवी रज़ियल्लाहु अन्हो

थे। कई कुतुब के लेखक थे। बेहतरीन मुनाज़िर, मुहक़्क़िक़ और आला पाए के लेखक थे। दिल्ली से सोला अख़बारात उन्होंने प्रकाशित किए। हज़रत-ए-सय्यद शफ़ी अहमद साहिब ने बारह वर्ष की आयु में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की थी। उपमहाद्वीप के प्रसिद्ध सूफ़ी शायर और बुज़ुर्ग ख़्वाजा मीर दर्द की नसल में से थे। और इस लिहाज़ से हज़रत मीर नासिर नवाब रज़ियल्लाहु अन्हो के अज़ीज़ों में से थे। हज़रत-ए-सय्यद शफ़ी अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो रिश्ते में हज़रत अम्मां जान रज़ियल्लाहु अन्हो के भांजे थे। 1957 ई. में आदरणीय मुहम्मद सईद अहमद सब इंजनीयर लाहौर छावनी के साथ उनकी शादी हुई और उनकी बेटी खालिदा साहिबा वर्णन करती हैं कि मेरी नानी ने माता पिता का रिश्ता करते हुए शर्त तक़्वा को समक्ष रखा। केवल यह देखा कि लड़का बाईस तेईस वर्ष की आयु में ऐसा क़ायद है जिसके बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो यह इरशाद फ़र्मा रहे हैं कि इस में कोई संदेह नहीं कि वह एक अधमरी जमाअत थी जिसमें ज़िंदगी की रूह फूंक दी गई और इस ख़िदमत का सेहरा उनके क़ायद मुहम्मद सईद अहमद और उनके चार पाँच मददगारों पर है। फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनकी ख़िदमत-ए-ख़ल्क़ का वर्णन किया कि पिछले सेलाब के अवसर पर उन्होंने ग़ैरमामूली तौर पर काम किया। अत: इस लिहाज़ से वह विशेषता प्रशंसा के योग्य हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने नसीम सईद साहिबा के पति की बड़ी प्रशंसा की थी और इसी चीज़ को समक्ष रखते हुए नसीम सईद साहिबा के माता ने उनका रिश्ता भी उन से किया। नसीम सईद साहिबा के चार बेटे और दो बेटियां हैं। दीनी ख़िदमात का सिलसिला उनका 1954 ई. में शुरू होता है जो उन्होंने हज़रत सय्यदा छोटी आपा के साथ काम से शुरू किया और 2015 ई. तक तक़रीबन 61 वर्ष यह जारी रहा। सईद साहिब क्योंकि फ़ौज में थे और उनका ट्रांसफ़र होता रहता था इसलिए विभिन्न शहरों में यह भी उनके साथ जाती थीं और वहां विभिन्न शहरों में उनको ख़िदमात का अवसर मिला और ख़ुद भी यह बड़ी पढ़ी लिखी और साहिब-ए-इल्म महिला थीं। बीस के क़रीब उनकी पुस्तकें हैं जिनमें नबियों के सम्बन्ध में कहानियां भी हैं और बुज़ुर्गों के बारे में भी बहुत सारी किताबें उन्होंने लिखी हैं। उनकी बेटी हामिदा ग़फ़ूर मन्नान कहती हैं कि मेरी माता इबादतगुज़ार, आलिम बाअमल, उच्च आचरण वाली, क़ुर्बानी करने वाली, मुहब्बत-ओ-शफ़क़त और विनम्रता की मूर्त थीं। हमेशा उनको दर्दे दिल से दुआएं करते देखा। तहज्जुद, नवाफ़िल और नमाज़ों का इल्तिज़ाम करते देखा है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो से लेकर अब तक उन्होंने चार खलीफ़ा के साथ ज़ाती सम्बन्ध रखा और उनको जमाअत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ भी मिलती रही। यहां मुझ से मुलाक़ात तो उनकी नहीं हुई थी लेकिन पत्राचार के माध्यम से यह हमेशा अपना प्रकटन करती थीं। उनके बच्चों ने भी यही लिखा है और ख़ुद मुझे भी जब उनके ख़त आते थे तो उनके पत्रों में ग़ैरमामूली प्रकटन होता था। केवल बातों की हद तक नहीं बल्कि हक़ीक़त में नज़र आता था कि ख़िलाफ़त के साथ उनका इख़लास और वफ़ा का सम्बन्ध है। अल्लाह तआला उनकी औलाद को भी इस सम्बन्ध को क़ायम करने की तौफ़ीक़ दे।

उनके बड़े बेटे ख़ालिद सईद साहिब कहते हैं कि हमें केवल यह कहा करती थीं कि अल्लाह तआला से सम्बन्ध हमेशा क़ायम रहे कि अल्लाह तआला से सम्बन्ध ऐसा हो जैसे अल्लाह आप के सामने दोस्त की तरह है। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ सच्चा इशक़ करो। ख़ुद भी किया और बच्चों को कहा यह करो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और जमाअत से गहरी रुहानी वाबस्तगी ख़ुद भी रखी और बच्चों को नसीहत की। ख़िलाफ़त से गहरा सम्बन्ध, मुकम्मल इताअत ख़ुद भी की और हमें भी सिखाई। जमाअत की ख़िदमत के लिए हर वक़्त तैयार रहती थीं। छोटी उमर से ही नमाज़ों और इस्लामी बातों पर बाक़ायदा से अमल करने की तलक़ीन किया करती थीं और हमें इस की आदत डाली। राह चलते ख़िदमत-ए-ख़ल्क़ करतीं और कहा करती थीं लोगों के लिए आसानियां पैदा करो। माली क़ुर्बानी की तरफ़ ख़ास तवज्जा थी। माली क़ुर्बानी करने के बाद फिर घर का ख़र्च चलाओ। रोज़ाना क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत करतीं और इस की हमें भी तलक़ीन करतीं। सिला रहमी और हर अमीर ग़रीब रिश्तेदारों से मज़बूत सम्बन्ध रखना उनकी विशेषता थी और हमें भी इस की तलक़ीन किया करती थीं। दावत इलाल्लाह के लिए हर समय तैयार रहती थीं। तहज्जुद पढ़ने की हमें बार-बार तलक़ीन करतीं। इलम बढ़ाने के लिए हमसे दर्स दिलवाती थीं और यही कहा करती थीं कि हर वक़्त मुस्कुराते रहो और किसी का बुरा न चाहो। मेहमान-नवाज़ी और विनम्रता कूट कूट कर उनमें भरा हुआ था। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। उनके बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अगला वर्णन दाऊद सुलेमान बट साहिब जर्मनी का है जो 46 वर्ष की आयु में कैंसर ले कारण से वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके पड़ दादा हज़रत अब्दुल हकीम बट साहिब के माध्यम से अहमदियत उनके ख़ानदान में आई थी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। उनके पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त एक बेटी और दो बेटे शामिल हैं। आपकी पत्नी समीरा दाऊद साहिबा कहती हैं। हमेशा जमाअत की ख़िदमत करने के लिए तैयार रहते। यही कोशिश होती कि किसी तरह जमाअत की ज़्यादा से ज़्यादा ख़िदमत कर सकें। हक़ीक़ी अर्थों में दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखने वाले इन्सान थे। सब जानने वालों का भी यही कहना है कि उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट रहती थी और सदक़ा-ओ-ख़ैरात में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे और हर वक़्त ख़िदमत के लिए तैयार रहने वाले थे। यहां जर्मनी में हिफ़ाज़ते ख़ास की डयूटी दिया करते थे और उनकी टीम के जो मैंबरान हैं उन्हों ने भी यही लिखा है कि बड़ी ख़ुशी से और पूरी ज़िम्मेदारी से डयूटी अदा किया करते थे और एक ख़ूबी उनकी यह थी कि हर काम शुरू करने से पहले क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत किया करते थे। यह मैंने भी देखा है कि बड़ी ख़ुश-उस्लूबी से उन्होंने हमेशा डयूटी अदा की है। अल्लाह तआला उनके परिजनों को सब्र और हौसला भी अता फ़रमाए और उनके बच्चों को उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ दे।

अगला वर्णन ज़ाहिदा प्रवीण साहिबा पत्नी ग़ुलाम मुस्तफ़ा ऐवान साहिब ढपई ज़िला स्यालकोट का है जो 61 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गई थीं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनकी बेटी हिब्बतुल कलीम साहिबा जो हमारे मबलग़ जमील तबस्सुम बशकरतस्तान रशिया की पत्नी हैं, वह कहती हैं कि मेरी माता अल्लाह के फ़ज़ल से पैदाइशी अहमदी थीं। मूसिया थीं। उनके घर और ख़ानदान में अहमदियत उनके माता और पिता के दादा दीवान बख़्श साहिब ऐवान के माध्यम से आई थी। कहती हैं मैंने जब से होश सँभाला है कभी भी तहज्जुद की नमाज़ को ज़ाए होते नहीं देखा और बच्चों को भी हमेशा इस बात की तलक़ीन करतीं कि जमाअत और ख़िलाफ़त अहमदिया से हमेशा अत्यधिक प्रेम रखो। पीछे रहने वालों में एक बेटा और चार बेटियां शामिल हैं। तीन दामाद उनके वाक़िफ़ ज़िंदगी हैं और दो बेटियां जो मुबल्लग़ीन से ब्याही हुई हैं अपने पतियों के साथ मुल्क से बाहर थीं इसलिए आख़िरी वक़्त में अपनी माता के पास नहीं आ सकें, देख नहीं सकें। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी नेकियां उनकी औलाद को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अगला वर्णन राना अब्दुल वहीद साहिब लंदन लड़के चौधरी अब्दुल हई साहिब तहसील जड़ांवाला ज़िला फैसलाबाद का है। 26 जून को उनको हार्ट-अटैक हुआ था तो वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसी थे और अन्सरुल्लाह में उन्होंने बड़ी लगाव से काम किया। इस के अतिरिक्त मस्जिद फ़ज़ल के सैक्रेटरी माल और सैक्रेटरी ज़याफ़त के तौर पर भी ख़िदमत अंजाम दे रहे थे। बड़े मेहनती कारकुन थे और बड़ी ख़ुशी से समस्त ख़िदमात किया करते थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके बच्चों को भी, परिजनों को सब्र और हौसला अता फ़रमाए।

अगला वर्णन अल्हाज मीर मुहम्मद अली साहिब साबिक़ अमीर जमाअत बंगला देश का है। यह 84 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह स्थानी और नैशनल जमाअत में कई ओहदों पर निर्धारित रहे। 1997ई. से 2003 ई. तक बतौर नैशनल अमीर बंगलादेश ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। फिर सैक्रेटरी रिश्तानाता और सैक्रेटरी तब्लीग़ की ज़िम्मेदारी सरअंजाम दी। 2013 ई. से अंतिम समय तक बतौर अमीर जमाअत ढाका ख़िदमत बजा लाते रहे। उनके इमारत के समय में बंगलादेश जमाअत ने काफ़ी तरक़्क़ी की है, खासतौर पर जमाअत की जायदाद और निर्माण का बड़ा काम हुआ है। मर्कज़ी मिशन हाऊस भी उन्होंने बनवाया था। फिर मसाजिद इत्यादि भी बहुत बनवाईं। बहुत नेक, मुख़लिस, दीनदार, तहज्जुद गुज़ार, हमदरद, दुआ करने वाले, माली क़ुर्बानी में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने वाले, बहुत से ग़रीबों का लाभ करने वाले, लोगों की सहायता करने व्यक्ति थे। ख़िलाफ़त के शैदाई और जमाअत के सक्रिय ख़ादिम थे। पीछे रहने वालों में दो बेटे और एक बेटी शामिल हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी औलाद को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। जैसा कि मैंने कहा नमाज़ के बाद इन सब के जनाज़ा ग़ायब अदा करूँगा।

☆ ☆ ☆ ☆

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-22)

बुल्ग़ारिया और हंगरी से आने वाले दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला मुलाक़ात

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

8 जून 2015 ई. दिन सोमवार(शेष रिपोर्ट)

बुल्ग़ारिया से आने वाले दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार छ: बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में पधारे जहां देश बुल्ग़ारिया से आने वाले दल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया।

बुल्ग़ारिया से इस वर्ष 76 लोग पर आधारित दल जलसा सालाना में शामिल हुआ जिन में से 50 लोग 30 घंटे से अधिक की यात्रा कर के आए थे। इस दल में 43 लोग ईसाई और ग़ैर अहमदी शामिल थे।

हुज़ूर अनवर ने दल के सदस्यों का हाल दरयाफ़त फ़रमाया और फ़रमाया जलसा कैसा रहा और आप के क्या विचारों हैं?

दल के एक मेंबर ने अर्ज़ किया कि मैं पहले भी जलसे में शामिल हो चुका हूँ इस दफ़ा बहुत अच्छा लगा। जलसा के समस्त इंतिज़ामात बहुत उच्चतम थे। हमने तक़रीर को बहुत ग़ौर से सुना है। हुज़ूर अनवर के भाषण ने हम पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। जमाअत अहमदिया संसार को बुरे कामों से रोकने और संसार में अमन के क़ियाम के लिए एक सकारात्मक किरदार अदा कर रही है।

जामिया अहमदिया जर्मनी में एक बुल्गारियन विद्यार्थी प्रिय अब्दुल्लाह शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं उस के माता पिता ने प्रश्न किया कि क्या अब्दुल्लाह अच्छी शिक्षा प्राप्त कर रहा है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो शिक्षा प्राप्त कर रहा है वह बहुत अच्छा है किस क़दर सीखा है इस का ज्ञान तो नहीं परन्तु बहर हाल जामिया पास करने के बाद उस को ट्रेनिंग भी देंगे। मुझे आशा है कि यह बुल्ग़ारिया के लिए अच्छा मुबल्लिग़ होगा। ख़ुदा तआला उसे तौफ़ीक़ दे कि यह विनम्रता के साथ अपने वक़्फ़ का हक़ अदा करने वाला हो। अब्दुल्लाह के पिता इब्राहीम साहिब एक दिन गर्व करेंगे कि उन का बेटा मुबल्लिग़ बना है।

अब्दुल्लाह की माता ने कहा कि मुझे अपने बेटे के लिए ऐसा रिश्ता चाहिए जो जमाअत के लिए मुफ़ीद हो। चाहे पाकिस्तानी लड़की हो या कोई और हो। कोई अच्छा रिश्ता मिल जाए जो जमाअत के लिए ख़ैर का कारण हो।

एक महिला ने कहा कि मैं यमन से सम्बन्ध रखती हूँ और बुल्ग़ारिया में पी एच डी की शिक्षा प्राप्त कर रही हूँ। जो शिक्षा हुज़ूर अनवर ने वर्णन फ़रमाई है कि जो अपने आपको मुस्लमान कहता है वह मुस्लमान है इस शिक्षा ने मुझ पर गहरा प्रभाव किया है। यह संसार में अमन क़ायम करने वाली शिक्षा है। उन्हों ने प्रश्न किया कि क़ुरआन-ए-करीम में लिखा है कि जो ख़ुदा की राह में शहीद हैं वह ज़िंदा हैं और ख़ुदा के हुज़ूर रिज़्क़ दिए जाते हैं इसका क्या अर्थ हैं। इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया पाकिस्तान में हमारे बहुत से अहमदी शहीद किए गए हैं। चूँकि उन्होंने धर्म की ख़ातिर जान दी। सच्चाई पर क़ायम रहे। सच्चाई को पहचाना। अपने धर्म की ख़ातिर, अपने दीन की ख़ातिर जान दी जाए तो ख़ुदा तआला ज़ाए नहीं करता।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यह जीवन अस्थाई है असल जीवन दूसरा जीवन है जो मरने के बाद मिलती है। जो रिज़्क़ दिया जाएगा वह ख़ुदा की प्रसन्नता को प्राप्त करने वाला होगा। दर्जात बुलंद होंगे और इस का कोई अनुमान नहीं कर सकता। शहीदों की नसलें भी इस से लाभ उठाती हैं और दुनियावी दृष्टि से बहुत आगे चली जाती हैं।

शहीदों के बारे में अल्लाह तआला ने जो यह फ़रमाया है कि वह ज़िंदा हैं इस का अर्थ यह है कि उनके काम हमेशा ज़िंदा रहेंगे। जिस दीन की ख़ातिर उन्होंने क़ुर्बानियां दीं उस दीन में और भी लोग पैदा होंगे। महान प्रगति होगी और ग़ैरमामूली सफ़लता नसीब होंगी और उन शहीदों की नसलें भी लाभ उठाएंगी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो यमन के हालात हैं। मुस्लमान एक दूसरे को क़तल कर रहे हैं और आपस में एक दूसरे की गर्दनें काट रहे हैं तो ख़ुदा ने उनके साथ क्या व्यवहार करना है वही जानता है।

हाँ यदि एक क़ौम के विरुद्ध जंग ठोंसी जाए और उस को लड़ाई पर मजबूर किया जाए तो फिर वह अपने दिफ़ा में अपनी जान बचाने के लिए हथियार उठाए और अपना दिफ़ा करते हुए कोई मारा जाए तो वह शहीद है।

अब जो यमन में लड़ाई हो रही है शीया सुन्नी एक दूसरे की गर्दनें काटे रहे हैं। सीरिया में शीया सुन्नी एक दूसरे को मार रहे हैं, एक दूसरे की गर्दनें काट रहे हैं इस किस्म के अत्याचार की इस्लाम कदापि आज्ञा नहीं देता।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया इसी लिए तो हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आना था कि समस्त मुस्लमानों और फ़िर्क़ों को एक हाथ पर जमा करें। अब मुस्लमानों की जीवनी इसी में है कि आने वाले मसीह-ओ-मह्दी को लें।

प्रश्न किया गया कि शहीदों के ज़िंदा होने वाली आयत से यह विश्लेषण किया जाता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ज़िंदा हैं और उनको रिज़्क़ दिया जा रहा है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यदि ईसा अलैहिस्सलाम आसमान पर ज़िंदा हैं तो फिर सब शहीद ज़िंदा हैं। इस लिए इस आयत से ग़लत विश्लेषण न करें। और ईसा अलैहिस्सलाम की वफ़ात पर जो दूसरी आयात हैं उन पर ग़ौर करें। अल्लाह तआला ने पहले वफ़ात का वर्णन फ़रमाया है फिर उठाए जाने का वर्णन फ़रमाया। यदि ईसा अलैहिस्सलाम ज़िंदा हैं और उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है और उन्होंने वापस आना है तो फिर यही व्यवहार दूसरे शहीदों के साथ होगा तो फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की क्या विशेषता रही।

प्रश्न करने वाले मित्र ने कहा कि मैं पहले इसी आस्था पर क़ायम था कि ईसा अलैहिस्सलाम ज़िंदा हैं। मैंने हुज़ूर अनवर की तक़ारीर सुनी हैं तो अब यह बात मेरे दिल में गड़ गई है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम वफ़ात पा चुके हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया। ज़िंदा नबी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं। ज़िंदा किताब क़ुरआन-ए-करीम है और ज़िंदा धर्म इस्लाम है और शरीयत इस्लाम है। यदि फ़ौत शूदा नबी ने ही आना है और बनीइस्राईल के नबी ने आना है तो हमारी ग़ैरत बर्दाश्त नहीं करेगी कि बनीइस्राईल का नबी हमारी हिदायत के लिए आए। अत: किसी फ़ौत शूदा ने आना। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत में से आपकी भविष्यवाणियों के अनुसार जिस मसीह ओ- मह्दी ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मसील के तौर पर आना था वह आ चुका है और आज संसार की नजात और संसार का अमन इसी व्यक्तित्व के साथ है।

एक मेहमान ने कहा कि मैं ईसाई हूँ। जलसा की आर्गेनाईज़ेशन बहुत अच्छी थी। हमारा प्रत्येक तरह से ख्याल रखा गया।

मेरा प्रश्न यह है कि सारे संसार का पैदा करने वाला एक ही है तो यदि आसमान से कोई और आएगा तो फिर संसार में फ़साद पैदा होगा।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ईसाई बाप बेटा कहते हैं। कई दफ़ा बेटा बिगाड़ पैदा कर देता है। दो ख़ुदा होंगे तो संसार में फ़साद पैदा होगा। वह आसमान से न भी आए, आसमान पर ही बैठा रहे और वहां से ही अपना आदेश चलाए तो तब भी संसार में बिगाड़, फ़साद पैदा हो जाएगा।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बनीइस्राईल की ओर आए थे। बनीइस्राईल की इस्लाह के लिए आए थे और अपना काम ख़त्म कर के इस संसार से विदा हुए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आए और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आख़िरी ज़माना में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसरण में हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पधारे। आपको जमाअत अहमदिया ने स्वीकार किया और अब जमाअत आप की शिक्षाओं पर अनुकरण कर रही है।

एक मेहमान ने प्रश्न किया संसार में जितने भी धर्म हैं जन्नत और दोज़ख़ की शिक्षा देते हैं। उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो एक दूसरे को क़तल करते हैं, एक दूसरे की गर्दनें काट रहे हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया किसी धर्म ने क़तल की शिक्षा नहीं दी। अल्लाह तआला ने यही फ़रमाया है कि अच्छे काम करोगे तो प्रतिफल मिलेगी और बुरे काम करोगे तो उस का दंड मिलेगा। क़ुरआन करीम ने جَنَّتَانِ कहा है इस संसार में अच्छे काम करने वालों के लिए जन्नत है और आख़िरत में भी जन्नत है। बाक़ी जो लोग क़तल-ओ-ग़ारत की शिक्षा देते हैं एक दूसरे की गर्दनें काटते हैं ये सब शैतानी काम हैं। ख़ुदा तआला ने क़ुरआन-ए-करीम के आरंभ में ही इस का वर्णन तमसीली भाषा में किया है। अच्छे काम करोगे तो जन्नत में जाओगे। बुरे काम करोगे, फ़ित्ना पैदा करोगे तो इस की सज़ प्राप्त करोगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जमाअत अच्छे कामों के लिए प्रयास करती है। जमाअत अमन की शिक्षा दे रही है। वे संदेश दे रही है जो ख़ुदा का संदेश है। जमाअत इन्सानियत की क़द्रें क़ायम करती है। अत: जमाअत के संदेश पर चलो। नेक-आमाल बजा लाओ।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यदि धर्म बिगाड़ पैदा करता है तो जमाअत को तो धर्म ने नहीं बिगाड़ा। जमाअत क़तल की शिक्षा तो नहीं देती। बल्कि निरन्तर अमन की शिक्षादे रही है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जिस तरह दुनियावी क़ानून होते है कि जो बुरा काम करता है उसे सज़ा मिलती है। यही क़ानून ख़ुदा का है कि बुरा काम करने वाले को सज़ा मिलती है।

एक महिला ने कहा कि मैं आपका शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ। आपका सारा प्रबन्ध बहुत मुनज़्ज़म और बहुत आला था। मैंने हुज़ूर अनवर की सब तक़रीरें सुनी हैं। मैं यह कहने पर मजबूर हों गई कि यदि बच्चे बड़े सब यह तक़रीरें सुनें तो उनकी बेहतरीन तर्बीयत हो सकती है। मैं अपने पोते पोतियों के लिए दुआ की दरख़ास्त करती हूँ कि कोई बुल्ग़ारिया में हो तो उनको सँभाले और तर्बीयत करे ताकि यह ज़ाए न हूँ।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया बुल्ग़ारिया का क़ानून आज्ञा नहीं देता। जब बुल्ग़ारियन मुबल्लग़ीन तैयार हो जाऐंगे तो वहां जाएंगे। हम दुआ करते हैं आप भी दुआ करें कि अल्लाह तआला हुकूमत को यह तौफ़ीक़ दे कि मुल्क में धार्मिक आज़ादी दे और मुल्ला के पीछे न चले बल्कि हक़ को पहचानने के लिए खुला अवसर दे और आज़दी दे।

दल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के भाषण को बहुत सराहा और इस बात का प्रकटन करते रहे कि यदि संसार हुज़ूर की बातें सुन ले और उन पर अनुकरण कर ले तो तबाही से बच जाएगी।

Etem साहिब अपनी फ़ैमिली के साथ जलसा में शामिल हुए। उन्हों ने कुछ वर्ष पूर्व ईसाइयत से इस्लाम स्वीकार किया। अहमदी होने से पहले किसी ईसाई फ़िर्क़ा के साथ सम्बंधित थे और वहां बड़ी अच्छी नौकरी कर रहे थे। परन्तु अहमदी होने के बाद सारी सहूलयात छोड़ कर वहां से अलग-अलग हो गए।

उन्हों ने कुछ वर्ष पूर्व जलसा सालाना यू.के के अवसर पर हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के बाद बैअत करने की तौफ़ीक़ प्राप्त की थी परन्तु उनकी पत्नी ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया था।

उनकी पत्नी का कहना था कि मेरी तीन बेटियां हैं यदि मुझे बेटा मिल जाए तो मैं भी अहमदी हो जाऊँगी। उन्हों ने हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ के लिए लिखा। अगले वर्ष जब वह पुन: जलसा में आएं तो सात माह की गर्भवती थीं। मुलाक़ात में उन्होंने बच्चे के लिए नाम रखने की दरख़ास्त की तो हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने केवल लड़के का नाम 'जाहिद 'तजवीज़ फ़रमाया :

जलसे से वापस जा कर उन्हों ने मुबल्लिग़ से कहा कि डाक्टरज़ ने बताया है कि लड़की है इस लिए हुज़ूर अनवर की सेवा में पुन: दरख़ास्त करें कि लड़की का नाम तजवीज़ फ़रमाएं :

इस पर मुबल्लिग़ ने कहा कि आपने तो कहा था कि यदि बेटा हुआ तो अहमदी हो जाऊंगी। और हुज़ूर अनवर ने भी केवल बेटे का नाम तजवीज़ फ़रमाया है। इस लिए इन शा अल्लाह बेटा ही होगा। डाक्टरज़ ग़लत भी हो सकते हैं तो इस पर कहने लगीं कि मैं तो पहले ही अहमदी हो चुकी हूँ। मेरी अब कोई शर्त नहीं है।

इस लिए जब बच्चा का जन्म हुई तो अल्लाह तआला ने उन्हें बेटे से ही नवाज़ा। वे जलसे के अवसर पर इस बेटे को साथ लेकर आई थीं और लोगों को बता रही थीं कि यह ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की दुआओं की स्वीकार्यता के प्रकटन का निशान है।

एक वकील Pmario Bikov साहिब जो निरन्तर पिछले 7 सालों से इस जलसा में शामिल हो रहे हैं वह कहने लगे कि

आज इस्लाम का असल चेहरा केवल ख़लीफ़ा ही वर्णन फ़रमाते हैं। दूसरे मुस्लमानों ने तो इस्लाम को बदनाम किया हुआ है। जो इस्लाम की तस्वीर हुज़ूर अनवर वर्णन फ़रमाते हैं दरअसल वही हक़ीक़ी इस्लाम है। दुनिया को इस ओर ध्यान करना चाहिए।

दल में शामिल एक महिला ने कहा :

खलीफ़तुल मसीह की बातें न केवल इन्फ़िरादी जीवन और घरेलू जीवन संवारने के लिए गारंटी प्रदान करती हैं बल्कि यह बातें तो इजतिमाई तौर पर समाज को संवारने के लिए भी गारंटी प्रदान करती हैं।

एक नौ-मुबाईन साफत आरिफ़ यफ़ुफ़ साहिब ने अपने भावनाओं का प्रकटन अपनी बुल्ग़ारियन भाषा में लिखी हुई एक नज़्म में कुछ इस प्रकार किया कि :

मेरे प्यारे रब ने तुझे चुना है हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ग़ुलाम! जिस ने इस दौर में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अख़लाक़ को देखना हो वह आप के चेहरा को देख ले। हे मेरे प्यारे हुज़ूर मैंने आपकी आँख में आँसू का एक छोटा सा क़तरा देखा है। जिसने मेरे दिल की ख़ुशक ज़मीन को सरसब्ज़ और शादाब बना दिया है। आपके आंसूओं के माध्यम स मैंने जर्मनी में जन्नत को देखा है। मेरे हुज़ूर आपने ऐसा चमत्कार किया है कि मुझ जैसे ग़रीब इन्सान को बुल्ग़ारिया से ढूंढ लिया है। मैं आपकी मेहरबानी का दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ हे मेरे प्यारे हुज़ूर।

बुल्ग़ारिया के दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल बिनस्रिहिल के साथ ये मुलाक़ात 7 बजे तक जारी रही। अंतिम दल के समस्त सदस्यों ने बारी-बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक दल के समस्त सदस्यों को क़लम प्रदान फ़रमाए और बच्चों बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए

8 जून 2015 ई. दिन सोमवार(शेष रिपोर्ट)

हंगरी से आने वाले दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

इस के बाद सात बजकर पाँच मिनट पर हंगरी से आने वाले दल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

हंगरी से 21 लोगों पर आधारित दल आया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दल के सदस्यों का हाल दरयाफ़त फ़रमाया :

हंगरी के एक मित्र Mezei Laszlo साहिब भी जलसे में शामिल हुए। वह पुलिस के विभाग में विभिन्न ओहदों पर काम करते रहे हैं और अब हंगरी के एक इन्क़िलाबी प्रधानमंत्री के नाम पर एक फ़ंड क़ायम किया है और इस के माध्यम से इन्सानियत की सेवा का काम करते हैं। वह धर्म से ईसाई हैं। उन्होंने अपनी भावनाओं का प्रकटन करते हुए कहा :

छोटा बड़ा प्रत्येक एक दूसरे को सलाम कर रहा था और प्यार से मिल रहा था। मुझे उन लोगों की ज़बानें तो समझ नहीं आईं परन्तु उनके चेहरे के विचारों से लग रहा था कि ये लोग प्यार बांट रहे हैं। मैंने दुनिया देखी है और पूर्व से लेकर पश्चिम तक इस किस्म का दृश्य नहीं देखा। मुझ पर इस जलसे का अजीब प्रभाव हुआ है। निश्चित तौर पर मैं ने अपने मित्रों को जानने वालों को भी जमाअत अहमदिया के इस जलसा के सम्बन्ध में बताऊंगा।

ख़लीफतुल मसीह के साथ मुलाक़ात के बाद कहने लगे कि मैं जितनी देर वहां बैठा रहा मुझे महसूस हो रहा था जैसे ख़लीफतुल मसीह के व्यक्तित्व से रोशनी की किरने निकल कर मेरे अंद जा रही हैं। इसी तरह यह बात मैंने जलसा में भी महसूस की कि जब खलीफ़तुल मसीह भाषण कर रहे थे तो ऐसा लगता कि आपकी आँखों से किरने निकल कर समस्त भीड़ पर पड़ रही हैं और सारा मजमा ख़लीफ़ा के कंट्रोल है।

उन्होंने कहा : इतना बड़ा मजमा इतने मुनज़्ज़म ढंग में आयोजित करना अपनी ज़ात में ही एक आश्चर्यचकित और वर्णन करने की शक्ति से परे चीज़ है।

(शेष......................)

☆ ☆ ☆ ☆

Virtual क्लास

नैशनल मज्लिस-ए-आमिला जमाअत अहमदिया कैनेडा की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ Virtual क्लास

जमाअत अहमदिया कैनेडा की नैशनल मज्लिस-ए-आमिला के मैंबरान अपने प्यारे इमाम सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात करने और हुज़ूर-ए-अनवर से अपने सिपुर्द किए हुए विभागों के विषय में सीधे मार्गदर्शन प्राप्त करने की शदीद इच्छा रखते थे जबकि वर्तमान हालात के कारण उनका बर्तानिया जाना और हुज़ूर-ए-अनवर से आमने सामने भेंट का सौभाग्य प्राप्त करना बज़ाहिर संभव नज़र नहीं आता था। इस लिए प्यारे आक़ा की सेवा में आदरणीय अमीर साहिब जमाअत अहमदिया कैनेडा की ओर से नैशनल आमिला की मुलाक़ात का निवेदन प्रस्तुत किया गया। अल्लाह तआला का फ़ज़ल हुआ और प्यारे हुज़ूर ने प्रेमपूर्वक यह निवेदन स्वीकार फ़रमाया।

तिथि 3 अक्तूबर 2020 ई. को 12 बजकर 47 मिनट पर इस मुबारक तक़रीब का आयोजन हुआ। इस बाबरकत मज्लिस के लिए ऐवान ताहिर कम्पलैक्स मस्जिद बैतुल इस्लाम में 32 मैंबरान नैशनल मज्लिस-ए-आमिला जमाअत अहमदिया कैनेडा जमा हुए। मुलाक़ात का निर्धारित समय एक घंटा तै पाया था लेकिन हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए अपने क़ीमती वक़्त से 16 मिनट अधिक प्रदान फ़रमाए। अल्हम्दुलिल्ला अला ज़ालिक

प्यारे हुज़ूर ने इस इज्लास का दुआ के साथ आरम्भ फ़रमाया। इसके बाद हुज़ूर-ए-अनवर की आज्ञा से आदरणीय अमीर साहिब ने हुज़ूर अनवर के आख़िरी दौरा कैनेडा के बाद कुछ उमूर के विषय में कैनेडा जमाअत की मुख़्तसर कारगुज़ारी रिपोर्ट पेश की। इस रिपोर्ट के बाद हुज़ूर अनवर ने आदरणीय मुबल्लिग़ इंचार्ज साहिब और नायब अमीरों से रिपोर्टस लीं। इस के बाद समस्त मैंबरान नैशनल मज्लिस-ए-आमिला ने बारी-बारी अपना परिचय करवाने के साथ-साथ अपने निर्धारित विभाग की संक्षेप रिपोर्ट हुज़ूर-ए-अनवर की ख़िदमत में पेश की। हुज़ूर अनवर ने समस्त मैंबरान आमिला को उनके विभागों के सम्बन्ध में क़ीमती हिदायात-ओ-रहनुमाई तथा उमूमी कार्यो के सम्बन्ध में उदेशों से भी नवाज़ा।

इस बाबरकत मुलाक़ात के दौरान हुज़ूर अनवर ने निहायत शफ़क़त और मुहब्बत से आमिला के मैंबरान को अपनी रिपोर्टस पेश करने में सहायता की। यह कार्य भी काबिल-ए-वर्णन है कि हुज़ूर अनवर भी अपने प्रेम करने वालो के साथ ऐसा दीनी सम्बन्ध रखते हैं कि अतिरिक्त इस के कि सब मैंबरान ने मास्क पहन रखे थे, हुज़ूर अनवर दौरान-ए-मीटिंग क़रीबन समस्त आमिला के मैंबरान को उनके नाम लेकर सम्बोधित फ़रमाते रहे।

निसंदेह यह मुलाक़ात जमाअत अहमदिया कैनेडा के लिए एक इंतिहाई मुबारक और इतिहासित्क मील का पत्थर थी। अल्लाह तआला समस्त सांसार के अहमदियों को अपने प्यारे इमाम हज़रत अमीरुल मौमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज के इर्शादात पर अमल पैरा होते हुए मिसाली अहमदी मुस्लमान बनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और वह दिन जल्द आएं जब हम अपने प्यारे आक़ा की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अपनी रूह की संतुष्टि का सामान करें। आमीन। (रिपोर्ट : सबीह नासिर जनरल सैक्रेटरी जमाअत अहमदिया कैनेडा)

(धन्यवाद अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 9 अक्तूबर2020)

Virtual क्लास

नैशनल मजलिस-ए-आमला जमाअत अहमदिया स्वीडन की हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से वर्चूअल मुलाक़ात

अमानत का योग्य होने के लिए आवश्यक है कि अतिरिक्त इस इलम के जो इस विभाग के लिए आवश्यक है, उस व्यक्ति के पास वक़्त भी हो और तक़्वा भी हो आपके पास एक प्लान होना चाहीए, इस प्लान पर सबसे पहले जिनको अमल करना चाहीए वह आपकी आमिला के मैंबरान हैं, नैशनल आमिला के भी और लोकल आमिला के भी, फिर उनका काम है कि अपने घरों में अमल करवाएं। (प्रथम :भाग)

जमाअत अहमदिया स्वीडन की नैशनल आमिला ने हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से 29 अगस्त 2020 ई. को (ऑनलाइन मुलाक़ात) की सआदत पाई। इस मीटिंग मेंनैशनल आमिला के अतिरिक्त पाँच लोकल मजालिस आमिला के कुल 133 लोग शामिल थे। दौरान-ए-मुलाक़ात हुज़ूर अनवर ने ओहदेदारान को उनके विभाग के हवाले से जो हिदायात और रहनुमाई अता फ़रमाई वे समस्त दुनिया में ख़िदमत पर निर्धारति ओहदेदारान के लिए मशाल-ए-राह है।

★ .....जनरल सैक्रेटरी साहिब के सवाल कि एक ओहदेदार को अपने विभाग को कितना वक़्त देना चाहिए? और यदि कोई ओहदेदार अपने विभाग को वक़्त नहीं देता तो किस तरह उस ओहदेदार को तवज्जा दिलाई जाए? के उत्तर में हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यह तो उन लोगों का काम है जो ओहदेदार को चुना करते हैं कि वे क़ुरआन-ए-करीम की गाईड लाईन पर अमल करें कि अमानतें उनके सपुर्द करो जो इस अमानत के अहल हैं। अमानत का अहल होने के लिए आवश्यक है कि अतिरिक्त इस इल्म के जो इस विभाग के लिए आवश्यक है, उस व्यक्ति के पास वक़्त भी हो और तक़्वा भी हो। तो ये चुनाओ करने वालों का फ़र्ज़ है कि उन लोगों को वोट दें जो वक़्त भी दे सकें, इन्साफ़ भी कर सकें और अपने ओहदों का हक़ भी अदा कर सकें। और जब सिफ़ारिशें आती है और ओहदेदार को निर्धारित कर दिया जाता है तो फिर उसका काम है कि वह मुकम्मल इन्साफ़ करते हुए अपने ओहदा को वक़्त दे। यदि वह वक़्त नहीं दे सकता तो तक़्वा का तक़ाज़ा है कि वह बता दे कि मैं वक़्त नहीं दे सकता और मा'ज़रत करले। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : लेकिन यह कहना कि निश्चित कर दें कि कितना समय देना चाहिए, यह तो काम पर आधारित है। इसलिए यह कहना कि कोई hard and fast rule हो कि कितना वक़्त देना चाहिए, यह तो हर ओहदेदार को ख़ुद देखना चाहिए। सैक्रेटरी माल को तो रोज़ ही अपने अन्य कामों में से वक़्त निकाल कर जमाअती काम करना पड़ता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया बाक़ी वे ओहदेदार जो जमाअती काम नहीं करते, बिल्कुल ही सुस्त हैं और उनको अपने ओहदों में कोई दिलचस्पी ही नहीं है, उनके बारे में तो कई दफ़ा मैं कह चुका हूँ कि नैशनल सदर जमाअत का या अमीर जमाअत का काम है कि मुझे सूचना दें और उनको उनके ओहदों से हटा दिया जाए। उनकी जगह कोई बेहतर काम करने वाले निर्धारित किए जाएं।

★... हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नैशनल सैक्रेटरी तर्बीयत को फ़रमाया कि सैक्रेटरी तर्बीयत का यह काम है कि अफ़राद-ए-जमाअत की तर्बीयत इस ढंग पर करें कि उनको पहली बात तो यह पता लगे कि हम अहमदी हैं और एक अहमदी की क्या ज़िम्मेदारियाँ हैं। एक अहमदी को अल्लाह तआला से कैसा सम्बन्ध क़ायम करना चाहिए, किस तरह सम्बन्ध पैदा करना चाहीए। इसका माध्यम से नमाज़ें हैं। क्या नमाज़ों की तरफ़ तवज्जा हो रही है कि नहीं हो रही? इसके अतिरिक्त दीन का इलम हासिल करना है, जिस के लिए सबसे आवश्यक क़ुरआन-ए-करीम है। क्या हम रोज़ाना क़ुरआन-ए-करीम पढ़ते हैं। विशेषता ओहदेदार। यदि आप नैशनल सतह से लेकर स्थानीय सतह तक समस्त ओहदेदारों को ही ले लें, तो पच्चास फ़ीसद से ज़्यादा तो आपकी रिपोर्टें उन्ही से आजाती हैं। क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ते हैं? क़ुरआन-ए-करीम के बहुत से आदेश कि क्या काम करने हैं और क्या काम नहीं करने, उन पर अमल होता है? यदि किसी हुक्म पर अमल नहीं हो रहा तो फिर क्या प्रोग्राम जमाअत को देना चाहिए फ़रमाया: सबसे पहले अपने क़रीब से शुरू करें। आपके सबसे क़रीब तरीन जो लोग हैं वे आपकी नैशनल आमिला के लोग हैं। फिर आपकी जमाअतों की आमिला के मैंबरान हैं। इस के साथ साथ हर आमिला मैंबर के घर के लोग हैं। अब यदि हर व्यक्ति इस

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 2 September 2021 Issue No.35

MANAGER : SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

नहज पर सोचे और तर्बीयत शुरू कर दे तो नब्बे फ़ीसद तो आपकी जमाअत cover हो गई। सैक्रेटरी तर्बीयत का काम पूरा हो गया। यदि केवल यह कहना है कि हमने एक प्लान बनाया था, जमाअतों को प्रोग्राम दिया था, सदर जमाअत ने रिपोर्ट मुकम्मल करके भिजवा दी और अमली तौर पर कुछ नज़र नहीं आया तो फिर इस का फ़ायदा क्या?

फ़रमाया असल बात तो यह है कि एक अहमदी को मालूम हो कि उसकी ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं और उसकी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी ख़ुदा तआला से सम्बन्ध पैदा करना है। क़ुरआन-ए-करीम की तालीम पर अमल करना है और उन आदेशों को विशेषता अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बनाना है जिन का आजकल के दौर के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन फ़रमाया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर हम ने क्या करना है, क्या हमारी ज़िम्मेदारियाँ हैं, क्या हमारे उदाहरण होने चाहिऐं। ख़िलाफ़त के साथ हमने कैसा सम्बन्ध रखना है। ख़िलाफ़त से नियमित रहनुमाई मिल रही होती है, इस पर ख़ुद भी और अपने घरों में भी कैसे अमल करवाना है। ख़ुतबात सुनते हैं कि नहीं सुनते। सुनते हैं तो कितने लोग सुनते हैं। क्या अमल कर रहे हैं। घरेलू हालात क्या हैं? पति पत्नी के सम्बन्ध कैसे हैं, बच्चों की तर्बीयत और उन्हें जमाअत से जोड़ने के लिए क्या कर रहे हैं? अपनी बीवी और बच्चों के लिए हमारे अपने रवैय्ये क्या हैं? ये चीज़ें हैं करने वाली। यह नहीं कि चार लाइनें लगा कर कह दिया कि हमने फ़ार्म बनाया था, यह फुल कर के दे दिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाया : नमाज़ पढ़ना तो एक फ़र्ज़ है, जो नमाज़ नहीं पढ़ता वह तो गुनहगार है। तो यदि नमाज़ पढ़ने का सत्तर फ़ीसद या पच्चास फ़ीसद टार्गेट पूरा कर लिया तो यह तो कोई कमाल नहीं किया। नमाज़ न पढ़ने वाले के बारे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बड़े सख़्त शब्द प्रयोग किए हुए हैं। नमाज़ पढ़ना तो कुरान-ए-क्रीम का बुनियादी हुक्म है। आरंभ से ही अल्लाह तआला ने कह दिया कि الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ , ग़ैब पर ईमान लाने के साथ ही नमाज़ का हुक्म दे दिया। तो यह कह देना कि हमने यह कर लिया है, यह तर्बीयत नहीं है। आपके पास एक प्लान होना चाहीए। इस प्लान पर सबसे पहले जिनको अमल करना चाहीए वह आपकी आमिला के मैंबरान हैं। नैशनल आमिला के भी और लोकल आमिला के भी। फिर उनका काम है कि अपने घरों में अमल करवाएं। तो जो मैंने बातें बताई हैं इस लिहाज़ से बताई कि इस में आपने क्या हासिल किया फ़रमाया: यदि आपकी तर्बीयत हो जाए तो न आपके घरेलू मसायल पैदा होंगे, पति पत्नी के झगड़े नहीं होंगे, बच्चों की तर्बीयत का मसला भी हल हो जाएगा। नौजवानों की जो ग़ैर लड़कियों से शादी करने की तरफ़ तवज्जा है वह भी ख़त्म हो जाएगी, लड़कियों के अच्छे रिश्ते मिलने लग जाऐंगे, लड़कियों को ख़ुद एहसास पैदा हो जाएगा कि हमने अहमदियों में रिश्ता करना है, अहमदी लड़के को एहसास होगा कि हमने अहमदी लड़की से रिश्ता करना है। उमूर-ए-आम्मा के झगड़े भी ख़त्म हो जाऐंगे। चंदे के मसायल भी हल हो जाऐंगे। इसलिए तर्बीयत का विभाग तो इंतिहाई अहम विभाग है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : फिर तर्बीयत का एक यह भी काम है कि आपका हर मैंबर बाअख़लाक़ होना चाहिए। किसी आमिला मैंबर पर कोई इस तरह उंगली न उठाए कि उस के अख़लाक़ अच्छे नहीं हैं।

फ़रमाया : छोटी जमाअतों को तो आईडीयल जमाअत होना चाहिए क्योंकि उनकी हर व्यक्ति तक पहुँच हो सकती है। सदर जमाअत को, अमीर जमाअत को, मिशनरी को और ओहदेदार को हर एक का पता होना चाहिए। उनके कवाइफ़ मालूम होने चाहिए। मैं दुनिया में हज़ारों लोगों को ज़ाती तौर पर जानता हूँ तो आप लोग अपनी जमाअत में रहते हुए क्यों नहीं जान सकते।

(शेष आगे ....)

(रिपोर्ट : सबीह नासिर जनरल सैक्रेटरी जमाअत अहमदिया कैनेडा)

(धन्यवाद अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 30 अक्तूबर2020)

पृष्ठ 1 का शेष

अर्थ नहीं कि फ़रिश्ते क़ुरआन-ए-करीम की हिफ़ाज़त नहीं करते क्योंकि जब ख़ुदा जो आक़ा है वह हिफ़ाज़त करता है तो फ़रिश्ते तो प्रथम श्रेणी के होने के कारण हिफ़ाज़त करेंगे। परन्तु اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ फ़रमाकर एक ज़ायद बात बयान की कि इस में कुछ ऐसी विशेषता हैं जिनकी हिफ़ाज़त फ़रिश्ते भी नहीं कर सकते बल्कि उनकी हिफ़ाज़त अल्लाह तआला ने ख़ुद अपने ज़िम्मे ली है। हर चीज़ की हिफ़ाज़त फ़रिश्ते करते हैं परन्तु ख़ुदा तआला की सीधे हिफ़ाज़त करने में एक हिक्मत है और क़ुरआन-ए-मजीद को आम चीज़ों से अलग करने वाला अंतर है।

(तफ़सीर-ए- कबीर भाग 5 पृष्ठ 14 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad